आज के समय में सड़क व कामकाजी बच्चों को पूर्ण रूप से अनदेखा किया जा रहा है। अपने साथ हो रहे इस अन्याय के खिलाफ उन्होंने कमर कसी और सड़क व कामकाजी बच्चों की समस्याओं पर अपना एक खुद का अखबार "बालकनामा" लिखकर प्रकाशित करने लगे।

बढ़ते कदम
सड़क एवं कामकाज़ी बच्चों का संघ

बालकनामा

आप भी बन सकते हैं
बालकनामा अखबार का हिस्सा
1 लिखकर
2 खबरों की लीड देकर
3 आर्थिक रूप से मदद करके

बालकनामा से जुड़ने के लिए इस पते पर संपर्क करें - 31 बेसमेंट, गौतम नगर, नई दिल्ली-110049
फोन नं. 011-41644471
ईमेल- editorbalaknama@gmail.com

अंक-134 | सड़क एवं कामकाजी बच्चों का अखबार | अक्टूबर 2025 | मूल्य - 5 रूपए

पाँच दिवसीय कार्यशाला: सड़क और कामकाजी बच्चों में जागा आत्मविश्वास, निखरे नेतृत्व गुण

बालकनामा रिपोर्टर किशन एवं राजकिशोर

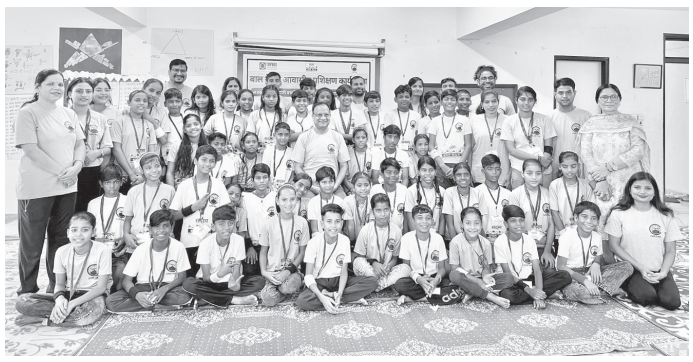

चेतना संस्था द्वारा बोध शिक्षा समिति, कूकस जयपुर में हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी अक्टूबर महीने में बच्चों के नेतृत्व विकास के लिए पाँच दिवसीय आवासीय कार्यशाला आयोजित की गई। इसमें जयपुर से 47 बच्चे, दिल्ली से 37 बच्चे और गुरुग्राम से 54 बच्चे शामिल हुए, यानी कुल 138 बच्चों ने भाग लिया। इस कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य बच्चों में नेतृत्व, टीमवर्क, आत्मविश्वास और रचनात्मकता को बढ़ावा देना था। पाँच दिनों तक बच्चों ने खेल, नाटक, चर्चा और रचनात्मक गतिविधियों के माध्यम से बाल अधिकार, बच्चों से जुड़े कानून, सपनों की दुनिया और उनकी राह में आने वाली रुकावटों के बारे में सीखा। गुब्बारा गतिविधि, लड़के और लड़की के हक, सपनों की दुनिया और वर्तमान स्थिति जैसी गतिविधियों ने बच्चों को नाटक, ड्राइंग, कोलाज और बातचीत के माध्यम से अपने विचारों और भावनाओं को खुलकर व्यक्त करने का अवसर दिया। साथ ही यह भी बताया गया कि बच्चों के अधिकार क्या हैं और किसी समस्या की स्थिति में बाल कल्याण समिति, जिला बाल संरक्षण इकाई और चाइल्ड हेल्पलाइन 1098 जैसी संस्थाएँ कैसे मदद कर सकती हैं। इस बार कार्यशाला की एक विशेषता यह रही कि बच्चों के लिए संगीत सत्र आयोजित किया गया, जिसमें बच्चों को संगीत सीखने का अवसर मिला। पहले दिन दिल्ली, गुरुग्राम, नोएडा और जयपुर के बच्चे और चेतना के कार्यकर्ता सुबह अपने स्थानों से प्रस्थान कर दोपहर तक कूकस पहुंचे। यात्रा के दौरान बच्चों ने गीत, संगीत और नृत्य का आनंद लिया। वहाँ पहुँचकर बच्चों का स्वागत किया गया, जूते-किट्स दिए गए और कमरों का आवंटन किया गया। रात में बच्चों के लिए मनोरंजन का आयोजन हुआ और सभी अपने-अपने कमरों में चले गए। दूसरे दिन प्रार्थना और परिचय के साथ कार्यशाला की शुरूआत हुई। बच्चों को दो समूहों में बांटा गया, एक समूह गतिविधियों के माध्यम से सीख रहा था और दूसरा संगीत के माध्यम से। बच्चों ने स्वयं कार्यशाला के नियम बनाए, जैसे अच्छे से सुनना, शरारत न करना, सफाई रखना, खाना बर्बाद न करना, पेड़-पौधों और आसपास की वस्तुओं को नुकसान न पहुँचाना और अपने कमरे का ध्यान रखना। इसके बाद साफ-सफाई समिति, खान-पान समिति, स्वास्थ्य समिति, अनुशासन समिति और मनोरंजन समिति का गठन किया गया, ताकि हर बच्चा जिम्मेदारी समझ सके और सामूहिक सहयोग कर सके। गुब्बारा गतिविधि के माध्यम से बच्चों ने सड़क और कामकाजी बच्चों की वर्तमान स्थिति बताई। उन्होंने कहा कि कई बच्चे गुब्बारे, फूल और सब्जियाँ बेचते हैं, कूड़ा उठाते हैं और दस्तावेज न होने या आर्थिक परेशानियों के कारण शिक्षा से दूर हो जाते हैं। खुशी की तुलना में परेशानियाँ अधिक सामने आईं। इसके बाद चार समूह बनाकर बच्चों ने चित्र, कोलाज, अभिनय और मोनो एक्टिंग के माध्यम से समस्याएँ और सपनों की दुनिया प्रस्तुत की। सपनों की दुनिया में बच्चे स्कूल जाते दिखे, अच्छा भोजन खाते, खेलों में भाग लेते, माता-पिता का प्यार पाते और खुश रहते। शाम को बच्चों ने खो खो और कबड्डी खेली और दिन समाप्त हुआ। तीसरे दिन बच्चों ने चर्चा के माध्यम से जाना कि एक अच्छा नेता कैसा होता है। बच्चों ने बताया कि एक नेता ईमानदार, पढ़ा-लिखा, समझदार, मददगार और सभी को आगे बढ़ाने वाला होना चाहिए। इसके बाद बच्चों को बालकनामा और बढ़ते कदम की प्रक्रिया समझाई गई और बाल अधिकारों के चार प्रमुख अधिकारों जीवन का अधिकार, विकास का अधिकार, सुरक्षा का अधिकार और भागीदारी का अधिकार के बारे में जानकारी दी गई। चौथे दिन बच्चों की सामूहिक तस्वीरें खींची गईं और नाटक के माध्यम से बच्चों को समझाया गया कि कानून से जुड़ी संस्थाएँ जैसे बाल कल्याण समिति, जिला बाल संरक्षण इकाई, पुलिस, डॉक्टर और हेल्पलाइन नंबर कैसे बच्चों की मदद करते हैं। संगीत सीख रहे बच्चों का सत्र भी अलग चलता रहा। अंतिम दिन सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें सभी समूहों ने प्रश्न उत्तर, नाटक, गीत, नृत्य, स्ट्रीट टॉक और कार्यशाला की कहानी मेरी जुबानी जैसी प्रस्तुतियाँ दीं। स्ट्रीट टॉक में बच्चों ने बताया कि सड़क और कामकाजी बच्चों का जीवन कितना चुनौतीपूर्ण होता है। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में श्री अशोक बैरवा उपस्थित रहे, जो राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद में सहायक प्राध्यापक हैं, और श्रीमती सीमा शर्मा उपस्थित रहीं, जो परामर्शदाता और उद्यमी हैं। और गुरुग्राम के बच्चों की कार्यशाला के कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में श्री लोहित अमेटा (सहायक निर्देशक, बाल अधिकारिता विभाग जयपुर) उपस्थित रहे। उन्होंने कहा कि यह कार्यशाला बच्चों को सिर्फ सिखाती ही नहीं बल्कि उन्हें अपने अधिकार पहचानने और आत्मविश्वास से आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है। कार्यशाला के अंत में बच्चों ने अपने अनुभव साझा किए। दिल्ली की 14 वर्षीय बालिका ने बताया कि चेतना संस्था से जुड़कर उसे स्कूल जाने का मौका मिला और वह अब रोज सातवीं कक्षा में जाती है। दिल्ली के एक 15 वर्षीय बालक ने कहा कि उसने बाल अधिकारों को पहली बार इतनी विस्तार से सीखा। गुड़गांव की 13 वर्षीय बालिका निहारिका (परिवर्तित नाम) ने कहा कि अब उसे समझ आया कि नेता सिर्फ स्कूल में नहीं बल्कि घर और समाज में भी होते हैं। जयपुर के 13 वर्षीय सोनू (परिवर्तित नाम) ने बताया कि वह घर की छत पर पानी की टंकी पर लकड़ी से आवाज करता था पर यहाँ आकर पता चला कि यह भी

शेष पृष्ठ 8 पर

चाइल्डलाइन की कहानी,कामकाजी बच्चों की जुबानी

बालकनामा रिपोर्टर: दामिनी
बातूनी रिपोर्टर: मायरा

1098 चाइल्डलाइन सेवा देशभर में बच्चों की सुरक्षा और सहायता के लिए 24 घंटे सक्रिय रूप से कार्यरत है। यह हेल्पलाइन न केवल बच्चों को आपात स्थिति में मदद प्रदान करती है, बल्कि उन्हें उनके अधिकारों के प्रति जागरूक भी करती है। यह जानना भी उतना ही आवश्यक है कि कामकाजी या कठिन परिस्थितियों में रह रहे बच्चों के इस सेवा से क्या अनुभव रहे हैं। इसी क्रम में बालकनामा रिपोर्टर दामिनी ने जयपुर की जेडीए बापू बस्ती का दौरा किया और वहां के बच्चों से बातचीत की।

चर्चा के दौरान 12 वर्षीय बालक केशव (परिवर्तित नाम) ने बताया, 'मैंने एक बार यह जानने के लिए 1098 पर फोन किया कि क्या यह सच में मदद करती है या यह सिर्फ एक नंबर भर है? जब मैंने फोन किया तो मुझसे बहुत अच्छे से बात की गई और मेरी समस्या के बारे में पूछा गया। मैंने बताया कि मैंने तो बस जानने के लिए फोन किया है। तब उन्होंने कहा कि मैं किसी भी परेशानी या जानकारी के लिए कभी भी फोन कर सकता हूं। मुझे बहुत अच्छा लगा और इस सेवा पर मेरा विश्वास और पक्का हो गया।'

वहीं, 13 वर्षीय बालिका मायरा (परिवर्तित नाम) ने अपना अनुभव साझा करते हुए बताया, 'पारिवारिक समस्याओं के कारण मैं कक्षा 9 की वार्षिक परीक्षा के दो पेपर नहीं दे पाई

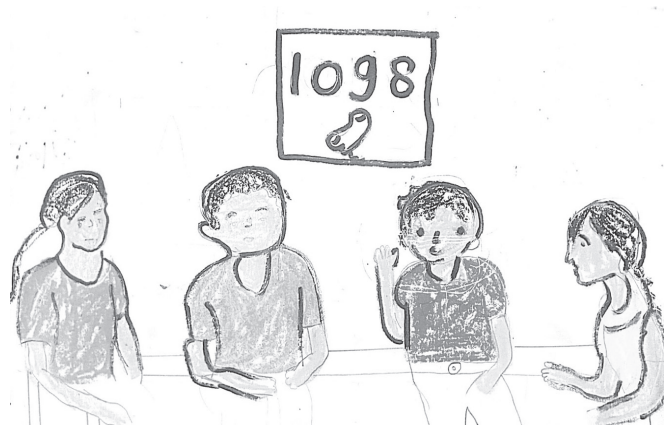

थी, जिसके चलते मेरा नाम विद्यालय से कट गया। लेकिन मैं पढ़ाई जारी रखना चाहती थी। जब मैंने सीनियर सेकेंडरी विद्यालय में प्रवेश के लिए आवेदन किया, तो बिना कोई कारण बताए प्रधानाचार्य और प्रवेश प्रभारी ने मेरा एडमिशन देने से मना कर दिया। चेतना संस्था के कार्यकर्ताओं ने कई बार स्कूल जाकर प्रयास किया, लेकिन कोई समाधान नहीं निकला। इसके बाद मैंने 1098 पर फोन करके अपनी समस्या बताई और पूरी जानकारी साझा की। चाइल्डलाइन की मैडम ने मेरी बात ध्यान से सुनी और विद्यालय के प्रिंसिपल से संपर्क किया। अगले दिन मुझे फोन कर बताया गया कि मैं फिर से स्कूल जाकर एडमिशन ले सकती हूं। जब मैं गई, तो मेरा दाखिला हो गया। इससे मुझे बहुत खुशी हुई।' इन अनुभवों से स्पष्ट है कि अब बच्चे अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हो रहे हैं। सड़क और कामकाजी बच्चों तक भी चाइल्डलाइन की जानकारी पहुंच रही है, और वे अपने समस्याओं के समाधान के लिए इस सेवा का उपयोग कर रहे हैं।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

बच्चों में स्वास्थ्य जागरूकता बढ़ा रहा है निःशुल्क हेल्थ कैंप

बालकनामा रिपोर्टर - राजकिशोर
बातूनी रिपोर्टर- रितिका

गुरुग्राम की विभिन्न झुग्गी-झोपड़ी बस्तियों में रहने वाले बच्चों ने बताया कि अस्वच्छ वातावरण और गंदगी के कारण यहाँ अक्सर बीमारियाँ फैलती रहती हैं, जिसके चलते कई लोग बार-बार बीमार पड़ जाते हैं। इसी समस्या को ध्यान में रखते हुए, सामाजिक संस्था चेतना ने इन बच्चों के लिए निःशुल्क स्वास्थ्य जाँच शिविरों का आयोजन किया, जिससे बच्चों को काफी लाभ मिल रहा है। बच्चों का कहना है कि इस हेल्थ कैंप के माध्यम से उन्हें समय-समय पर मुफ्त स्वास्थ्य परीक्षण की सुविधा मिलती है। सामान्य बीमारियों की स्थिति में वहीं दवा उपलब्ध कराई जाती है, जबकि गंभीर रोग के मामले में डॉक्टर उन्हें अस्पताल जाकर आगे का इलाज कराने की सलाह देते हैं। इससे बच्चे समय रहते सही उपचार प्राप्त कर पाते हैं और बीमारियों से बचाव हो पा रहा है।स्वास्थ्य शिविर में योग्य और प्रशिक्षित डॉक्टर न सिर्फ जाँच करते हैं, बल्कि बच्चों को रोगों से बचने के तरीके और स्वस्थ जीवनशैली अपनाने के बारे में भी जानकारी देते हैं। डॉक्टरों ने बच्चों को सलाह दी कि वे पौष्टिक और संतुलित भोजन करें, तला-भुना खाने से बचें, नियमित योग या पीटी (व्यायाम) करें, व्यक्तिगत स्वच्छता का ध्यान रखें, रोज स्नान करें, दाँत साफ करें और घर-आसपास सफाई बनाए रखें। साथ ही, मोबाइल फोन के अत्यधिक उपयोग से बचने की बात भी कही, क्योंकि इसका नकारात्मक प्रभाव मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ता है। बच्चों के अनुसार, इन स्वास्थ्य शिविरों के कारण उनमें साफ-सफाई, रोग प्रतिरोध और स्वस्थ आदतों के प्रति जागरूकता बढ़ी है। अब वे बीमारियों से बचाव कर पा रहे हैं और उनका शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य पहले से बेहतर हो रहा है। चेतना संस्था बच्चों के समग्र विकास के लिए लगातार प्रयासरत है। बच्चों ने बताया कि पहले उनके घर वाले केवल गंभीर बीमारी में ही इलाज करवाते थे, लेकिन अब नियमित स्वास्थ्य जांच होने से उनके स्वास्थ्य में सकारात्मक बदलाव आ रहा है।

सड़क और कामकाजी बच्चे गड्ढों में गिरकर हो रहे घायल

बालकनामा रिपोर्टरः रितिका
बातूनी रिपोर्टरः अंकुश

गुरुग्राम के चक्करपुर कम्यूनिटी में बरसात के दिनों ने लोगों की परेशानी बढ़ा दी है। जगह-जगह बने गड्ढों में पानी भरने से बच्चों और बड़ों दोनों के लिए गुजरना मुश्किल हो गया है। बालकनामा रिपोर्टर रितिका जब वहां पहुंचीं, तो उन्होंने स्थानीय बच्चों और परिवारों से बातचीत की। 13 साल के कुश (परिवर्तित नाम) ने बताया, 'बारिश के दिनों में गड्ढों में पानी भर जाता है। पानी इतना जमा हो जाता है कि गड्ढे दिखाई ही नहीं देते और लोग अनजाने में गिर जाते हैं।' उसने बताया कि 4 अगस्त की शाम करीब 7:30 बजे तेज बारिश के दौरान कई लोग इन गड्ढों में फिसलकर गिर पड़े। कुश ने दुख भरी आवाज में कहा, 'मेरी मम्मी भी उस दिन गड्ढे में गिर गई थीं। उन्हें बाहर निकलने में बहुत दिक्कत हुई, और अब वह बीमार हैं। पिछले दो-तीन दिनों से वो काम पर भी नहीं जा पा रही हैं।' कुश ने यह भी बताया कि केवल उसकी मां ही नहीं, बल्कि 3-4 और बच्चे भी इन गड्ढों में गिरकर बीमार पड़े हैं। जब पूछा गया कि आखिर इतने गड्ढे क्यों बने हुए हैं, तो बच्चों ने बताया, 'यहां रोज सीवर का पानी जमा रहता है। सड़क बनाने का काम चल रहा है, लेकिन लगातार हो रही बारिश की वजह से पानी और कीचड़ बढ़ता जा रहा है।' बरसात के मौसम में खुले और पानी से भरे ये गड्ढे बच्चों, महिलाओं और बुजुर्गों की सुरक्षा के लिए बड़ा खतरा बन गए हैं। स्थानीय लोगों का कहना है कि अगर जल्द ही गड्ढों को भरा नहीं गया और सड़क व्यवस्थित नहीं हुई, तो हादसे और बढ़ सकते हैं।

गंदगी और बदबू से परेशान सड़क एवं कामकाजी बच्चे

बालकनामा रिपोर्टर - राजकिशोर
बातूनी रिपोर्टर - आदित्य

गुरुग्राम की पालरा बस्ती में रहने वाले सड़क और कामकाजी बच्चे इन दिनों भारी गंदगी और तेज बदबू से काफी परेशान हैं। बालकनामा टीम के रिपोर्टर राजकिशोर और बातूनी रिपोर्टर आदित्य ने जब बस्ती का दौरा किया और बच्चों से बातचीत की, तो बच्चों ने अपनी गंभीर समस्या सामने रखी। बच्चों ने बताया कि बस्ती के पास ही एक जगह है जहाँ लोग कूड़ा फेंकते हैं। खासतौर पर मांस और मछली बेचने वाले दुकानदार खराब और सड़ा हुआ सामान वहीं डाल जाते हैं। जब यह गंदगी सड़ने लगती है, तो आसपास इतनी तेज दुर्गंध फैलती है कि वहाँ खड़े होना भी मुश्किल हो जाता है। कई बच्चों ने कहा कि इस बदबू की वजह से वे उस रास्ते से गुजर तक नहीं पाते। रिपोर्टर टीम ने जब उस जगह का निरीक्षण किया, तो पाया कि बच्चों की शिकायत बिल्कुल सही है। वहाँ बड़ी मात्रा में कूड़ा जमा था, जगह-जगह गंदा पानी भरा हुआ था और मक्खियों की भरमार थी। स्थानीय लोगों ने बताया कि बस्ती में कूड़ा डालने की कोई उचित व्यवस्था नहीं है, इसलिए सभी लोग मजबूरी में उसी ढेर पर कचरा फेंकते हैं। बस्तीवासियों का कहना है कि कूड़ा निस्तारण की सही व्यवस्था न होने के कारण गंदगी लगातार बढ़ रही है, जिससे बच्चों और परिवारों का स्वास्थ्य खतरे में है। बदबू और गंदगी की वजह से बच्चों के लिए उस इलाके से गुजरना भी मुश्किल हो जाता है। लोगों ने प्रशासन से अपील की है कि बस्ती में नियमित सफाई की व्यवस्था की जाए और कचरा फेंकने के लिए उचित स्थान उपलब्ध कराया जाए, ताकि बच्चों और परिवारों को इस गंभीर समस्या से राहत मिल सके।

लाइफ स्किल वर्कशॉप से बच्चों ने सीखे संतुलित आहार के फायदे, जंक फूड के नुकसान

बालकनामा रिपोर्टर -राज किशोर

गुरुग्राम की बस्तियों में आयोजित लाइफ स्किल वर्कशॉप ने बच्चों को स्वस्थ जीवनशैली और सही खानपान की अहमियत समझाई। बच्चों ने बताया कि इन वर्कशॉप से उन्हें संतुलित आहार, पोषण के महत्व और जंक फूड के खतरों के बारे में उपयोगी जानकारी मिली। बच्चों के अनुसार, वर्कशॉप में समझाया गया कि संतुलित आहार वह है जिसमें शरीर को आवश्यक सभी पोषक तत्व शामिल हों– प्रोटीन, वसा, विटामिन, खनिज और काबोर्हाइड्रेट। प्रशिक्षकों ने बच्चों को सही तरीके से भोजन और पानी पीने की आदतें भी सिखाईं। जैसे– भोजन को धीरे-धीरे और अच्छे से चबा कर खाना चाहिए, खाने के समय अधिक पानी नहीं पीना चाहिए, पानी हमेशा बैठकर और धीरे-धीरे घूंट-घूंट करके पीना चाहिए। नाश्ता सुबह 8 बजे तक और दोपहर का भोजन 12 से 1 बजे के बीच करना चाहिए। खाते समय मोबाइल फोन का उपयोग नहीं करना चाहिए और बासी खाना बिल्कुल नहीं खाना चाहिए। वर्कशॉप में यह भी बताया गया कि पौष्टिक भोजन बच्चों के शारीरिक और मानसिक विकास के लिए अत्यंत जरूरी है। वहीं जंक फूड में पोषक तत्वों की कमी होती है। इसके अधिक सेवन से मोटापा, मधुमेह, उच्च रक्तचाप जैसी गंभीर बीमारियों का खतरा बढ़ जाता है, जिससे बच्चों का संपूर्ण विकास प्रभावित हो सकता है। बच्चों ने कहा कि इस वर्कशॉप से उनमें पौष्टिक भोजन के प्रति जागरूकता बढ़ी है और अब वे जंक फूड से दूरी बनाकर स्वस्थ खानपान अपनाने की कोशिश करेंगे।

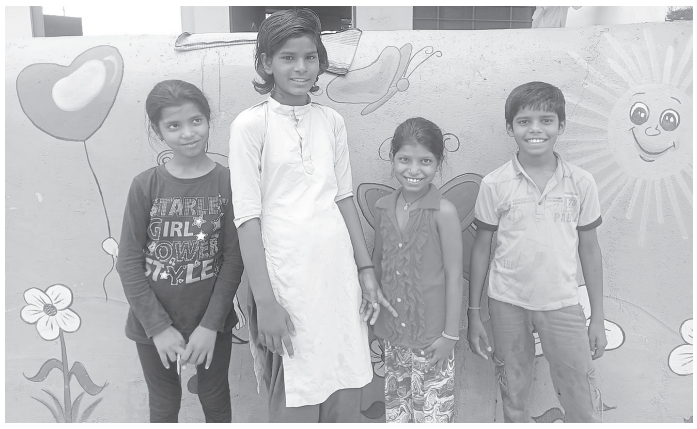

शिक्षा प्राप्त करके बालिका के चेहरे पर आई मुस्कान

बातूनी रिपोर्टर मिस्टी व रिपोर्टर किशन

सड़क पर रहने वाले बच्चे रोजाना स्कूल की ओर जा रहे थे, लेकिन उनमें से 13 वर्ष की एक बालिका की खुशी सबसे अलग और अनोखी थी। जब पत्रकार दिल्ली की एक बस्ती में जाकर बच्चों से बात कर रहे थे और उनकी समस्याओं को समझने की कोशिश कर रहे थे, तभी यह बालिका अपनी शिक्षा से जुड़ी खुशी साझा करने लगी। उसने बताया कि वह वर्तमान में अपने माता-पिता के साथ पश्चिम दिल्ली की बस्तियों में रहती है। पहले वह अपने गाँव में रहती थी और वहाँ पढ़ाई करती थी, लेकिन कुछ कारणों से उसके पापा उसे दिल्ली ले आए, जिसके बाद उसकी पढ़ाई बीच में ही रुक गई। उस समय तक वह सिर्फ चौथी कक्षा तक पढ़ पाई थी। दिल्ली आने के बाद रोजमर्रा की ज़िंदगी में स्कूल छूट गया और समय घर के कामों और खेलकूद में बीतने लगा। इसी दौरान एक दिन उसकी मुलाकात चेतना संस्था के कार्यकर्ताओं से हुई। उन्होंने उसके बारे में जानकारी ली, और जब उन्होंने जाना कि उसकी पढ़ाई रुक चुकी है, तो उन्होंने उसे 'बढ़ते कदम' संगठन से जोड़ा। कुछ ही दिनों में उसका पाँचवीं कक्षा में दाखिला हो गया। बालिका ने बताया कि अब वह छठी कक्षा में पहुँच गई है और पाँचवी कक्षा में उसने 600 में से 510 अंक प्राप्त किए। उसे यह उपलब्धि पाकर बहुत खुशी हुई। घर वालों ने भी उसकी सफलता पर प्रसन्नता जताई और स्कूल की अध्यापिकाओं ने भी उसे बधाई दी और सराहना की।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

रंग-बिरंगे कार्टून कार्ड बने बच्चों का नया पसंदीदा खेल

बालकनामा रिपोर्टरः दीपक
बातूनी रिपोर्टरः काजल

बालकनामा रिपोर्टर ने जयपुर की बगराना कच्ची बस्ती का दौरा किया। वहाँ बातूनी रिपोर्टर काजल ने बताया कि उनकी बगराना बस्ती में बच्चों ने एक नया खेल खेलना शुरू किया है। इस खेल में बच्चे कार्टून तस्वीरों वाले काड्र्स से खेलते हैं। तस्वीर में दिख रहे कार्टून किरदारों को रंग-बिरंगे कार्डों से मिलाना होता है। ये कार्ड कोई महंगी चीज नहीं हैं और न ही मोबाइल गेम की तरह खतरनाक। यह एक पारंपरिक 'कार्टून चित्र कार्ड खेल' है, जिसे बच्चे खुद इकट्ठा करते हैं, छांटते हैं और आपस में अदला-बदली करके खेलते हैं। अभिभावक अक्सर बच्चों को 10 से 20 रुपये में ये कार्ड पोस्ट दिला देते हैं, जिससे कई बच्चे घंटों तक साथ बैठकर चुपचाप खेलते रहते हैं और मोबाइल का उपयोग नहीं करते। बच्चों ने बताया कि यह उनका पसंदीदा खेल है क्योंकि इसमें उन्हें मजा आता है और इसके लिए मोबाइल या किसी इलेक्ट्रॉनिक चीज की जरूरत नहीं पड़ती। एक बच्चे ने मुस्कुराते हुए कहा– 'हम कार्ड से खेलते हैं, उनमें सुपरहीरो होते हैं। कभी नंबर मिलाते हैं, कभी मुकाबला करते हैं।' इस खेल में न कोई हार है, न जीत–सिर्फ दोस्ती, समय बिताने का तरीका और ढेर सारी कल्पनाएँ।

पढ़ने की उम्र में जिम्मेदारियों का बोझ पड़ रहा भारी

बालकनामा रिपोर्टरः दीपक
बातूनी रिपोर्टरः वरुण

जयपुर की कच्ची बस्ती लखेसरा में बालिकाओं का शिक्षा से वंचित होना एक गंभीर मुद्दा बन गया है। इस संबंध में बातूनी रिपोर्टर वरुण ने बताया कि अधिकांश बालिकाएँ घर के कार्यों में इतनी व्यस्त रहती हैं कि उन्हें पढ़ाई के लिए समय ही नहीं मिल पाता। विशेष रूप से, छोटी-छोटी बच्चियों को अपने छोटे भाई-बहनों की देखभाल करनी पड़ती है और रेडियम पट्टी के काम में माता-पिता की सहायता करनी होती है, जिसके कारण वे नियमित रूप से स्कूल नहीं जा पाती हैं। 11 वर्षीय बालिका छाया (परिवर्तित नाम) बताती है कि उसके माता-पिता दोनों काम पर जाते हैं और सुबह जल्दी घर से निकल जाते हैं। इसलिए छोटे भाई-बहनों की देखभाल की जिम्मेदारी उसी पर होती है। वह कहती है, 'सुबह जल्दी उठकर पानी भरना, झाड़ू लगाना, कभी-कभी खाना बनाना और भाई का ध्यान रखना–ये सब मेरा रोज का काम है। मैं अपनी जिम्मेदारी अच्छे से निभाने की कोशिश करती हूँ।' छाया ने यह भी कहा कि यह समस्या केवल उसकी नहीं है, बल्कि बस्ती की ज्यादातर लड़कियों की यही स्थिति है। कई माता-पिता 10 वर्ष की उम्र के बाद बालिकाओं को घर से बाहर भेजना भी पसंद नहीं करते। उनका मानना है कि लड़कियाँ बड़ी हो गई हैं और घर के कामों में ही उनका समय लगना चाहिए। इन्हीं कारणों से बस्ती की अधिकांश बालिकाएँ शिक्षा से वंचित होती जा रही हैं। घर की जिम्मेदारियाँ, भाई-बहनों की देखभाल और कभी-कभी परिवार की आर्थिक आवश्यकता के लिए काम में हाथ बँटाने के कारण उनकी पढ़ाई बाधित होती है। इसका सीधा असर उनके भविष्य पर पड़ रहा है–वे स्कूल नहीं जा पातीं, उनका सीखना रुक जाता है और शिक्षा पूरी न होने से उनके अवसर भी सीमित हो जाते हैं। बस्ती में बालिकाओं की यह चिंताजनक स्थिति दशार्ती है कि शिक्षा के अधिकार और अवसरों को लेकर अभी भी बड़े बदलाव की जरूरत है।

सड़क एवं कामकाजी बच्चों ने रचनात्मक तरीकों से मनाया शिक्षक दिवस, शिक्षकों संग बांटी खुशियाँ

बालकनामा रिपोर्टरः दामिनी

शिक्षकों के लिए सबसे बड़ा पुरस्कार यही है कि उनके विद्यार्थी जीवनभर उन्हें याद रखें और परिवार, समाज व देश के लिए सराहनीय योगदान दें। इसी भाव के साथ, समय के साथ-साथ सड़क एवं कामकाजी बच्चों और शिक्षकों का संबंध और गहरा होता जा रहा है। इस स्नेहिल संबंध का सुंदर संदेश चेतना संस्था के विभिन्न वैकल्पिक शिक्षा केंद्रों पर देखने को मिला, जहाँ बच्चों ने अपने-अपने शिक्षकों के साथ उत्साहपूर्वक शिक्षक दिवस मनाया। कुछ बच्चों ने शिक्षकों को सेंटर पर बुलाकर फूल-माला पहनाकर, केक कटवाकर स्वागत किया, जबकि कई जगह बच्चे स्वयं स्कूल पहुंचे और अपने हाथों से ग्रीटिंग कार्ड, बुके, फोटो फ्रेम, स्कूल मॉडल इत्यादि बनाकर उन्हें भेंट किए। कई केंद्रों पर बच्चों ने शिक्षक-बाल मेला भी आयोजित किया, जिसमें बच्चों ने स्वयं शिक्षक बनकर उनकी जिम्मेदारियों और चुनौतियों जैसे–टीचर्स का अन्य ड्यूटी में लग जाना, बच्चों को कक्षा अनुसार लेवल न मिल पाना–आदि को मजाकिया पर गंभीर अंदाज में प्रस्तुत किया, और अंत में संदेश दिया कि यदि शिक्षक और विद्यार्थी मिलकर ग्रुप वर्क करें, तो कई चुनौतियों को आसानी से कम किया जा सकता है। इन नन्हे शिक्षकों की भूमिका निभाते देख असल शिक्षकों ने बड़ी खुशी और उत्सुकता जताई। एक शिक्षक ने हँसते हुए कहा–'आज तो हम केक अपने कॉपी-कैट्स के साथ ही खाएंगे।' वहीं जब बच्चों से पूछा गया कि उन्होंने अपने पसंदीदा शिक्षक क्यों चुने, तो बच्चों ने मासूमियत भरे उत्तर दिए। बालक अंशु (12 वर्ष) ने बताया– 'मुझे अपने टीचर्स का स्थानीय भाषा में प्यार से और मजाकिया अंदाज में पढ़ाना अच्छा लगता है।' राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों और प्रधानाचार्यों ने यह स्वीकार किया कि पहले वे इन बच्चों को अलग समझते थे और इन्हें पढ़ाना चुनौतीपूर्ण लगता था, लेकिन समय के साथ बच्चों में आए सकारात्मक बदलाव देखकर खुशी होती है। शिक्षक रतनजी ने बताया कि चेतना संस्था बच्चों के सम्पूर्ण विकास पर कार्य कर रही है, और इन बच्चों में सीखने का नया जोश और उत्साह देखने को मिलता है। बच्चों ने अपने एजुकेटर्स के साथ प्यार और अपनापन दशार्ते हुए हाथों व उंगलियों के फिंगरप्रिंट भी दिए। सभी गतिविधियाँ यह दशार्ती हैं कि बच्चों और शिक्षकों के बीच प्रेम, आदर और समर्पण की एक मजबूत डोर विकसित हो रही है।

गलत आदतों से दूर होकर पढ़ाई की राह पर लौटा किशोर

बातूनी रिपोर्टर परवेज व रिपोर्टर किशन

खेलना स्वास्थ्य के लिए लाभदायक है, यह बात सभी जानते हैं, लेकिन यह समझना भी महत्वपूर्ण है कि बच्चे किस माहौल में, किस तरह के खेल खेल रहे हैं और उनका प्रभाव उनके व्यवहार और भविष्य पर कैसा पड़ रहा है। पत्रकारों के दौरे के दौरान, बस्ती में रहने वाले 13 वर्षीय बालक राहुल (परिवर्तित नाम) ने अपनी वास्तविक कहानी साझा की। उसने बताया कि इस बस्ती में ज्यादातर परिवार साधारण जीवन जीते हैं, लेकिन आस-पास का वातावरण काफी खराब है, जिसके कारण बच्चे गलत आदतों और गलत संगत में बहुत जल्दी फंस जाते हैं। राहुल ने कहा कि लगभग दो महीने पहले वह भी उसी रास्ते पर था। वह सुबह से शाम तक कंचा, लट्टू, और माचिस के सिक्कों से पैसों वाला खेल खेलता था। कभी पैसे जीतकर खुश होता और कई रबार हारकर परेशान, लेकिन उसका पूरा समय इन्हीं खेलों में निकल जाता था। खेलों की लत इतनी बढ़ गई थी कि उसने स्कूल जाना लगभग बंद कर दिया था और पढ़ाई में रुचि ही खत्म हो गई थी। राहुल का एक दोस्त उसे लगातार समझाता रहा। वह उसे चेतना संस्था द्वारा चल रहे एजुकेशन क्लब में ले जाना चाहता था, लेकिन राहुल हर बार मना कर देता था। एक दिन दोस्त उसे मजबूर करके क्लब तक ले गया। राहुल कुछ दिन गया, फिर आदत के कारण छोड़ भी दिया। बाद में एजुकेशन क्लब की कार्यकर्ता उसके घर आईं, उससे लंबी बात की, सही और गलत का फर्क समझाया, भविष्य के महत्व के बारे में बताया और पढ़ाई का अर्थ समझाया। धीरे-धीरे राहुल क्लब में नियमित रूप से आने लगा। कुछ सप्ताह में उसके व्यवहार, भाषा, सोच और दिनचर्या में बदलाव दिखाई देने लगा। चेतना संस्था की मदद से उसका स्कूल में दाखिला भी करवा दिया गया। आज राहुल गर्व से बताता है कि वह छठी कक्षा में पढ़ रहा है, रोज स्कूल जाता है और पैसों वाले खेल पूरी तरह छोड़ चुका है। राहुल कहता है कि अब उसे अपना भविष्य सही दिशा में जाता हुआ दिखाई देता है, और यह बदलाव उसके दोस्त, एजुकेशन क्लब और चेतना संस्था की वजह से संभव हो पाया है।

बस्तियों में बच्चों के खुले बैंक खाते, अब लाभ मिलेगा सीधे खाते में

बातूनी रिपोर्टरः आयूष

बालकनामा रिपोर्टर ने जयपुर की विभिन्न कच्ची बस्तियों का दौरा किया और बच्चों की समस्याओं तथा उपलब्धियों को समझने का प्रयास किया। इस दौरान बच्चों के बैंक खाते खुलने की पहल सामने आई। 14 वर्षीय आयुष (परिवर्तित नाम) ने बताया कि एक दिन मांग्यावास केंद्र के बच्चे अपने शिक्षक के साथ बैंक ऑफ बड़ौदा पहुंचे और मैनेजर से निवेदन किया कि वे बच्चों की मदद करें। बच्चों ने बताया कि कई साथी आर्थिक और पारिवारिक परिस्थितियों के कारण स्वयं बैंक तक नहीं जा पाते, ऐसे में यदि बैंक सहयोग करे तो अधिक संख्या में खाते खुल सकते हैं। बच्चों की यह मांग गंभीरता से लेते हुए बैंक ऑफ बड़ौदा प्रबंधन ने पहल की और चेतना संस्था के शिक्षा केंद्र पर विशेष कैंप लगाया। इस कैंप में उन बच्चों के खाते भी खोले गए जो बैंक आने में असमर्थ थे। खाते खुलने से अब विद्यालय द्वारा दी जाने वाली स्कूल ड्रेस की राशि तथा विभिन्न सरकारी योजनाओं का लाभ सीधे बच्चों के खातों में पहुँच सकेगा। इस पहल ने बस्तियों में रहने वाले परिवारों और बच्चों के बीच नई उम्मीद जगाई है। बच्चे अब अपने बैंक अकाउंट के माध्यम से बचत की आदत सीख पाएंगे और आत्मनिर्भर बनने की दिशा में आगे बढ़ सकेंगे। चेतना संस्था और बैंक ऑफ बड़ौदा की इस संयुक्त पहल से अन्य कच्ची बस्तियों में भी बैंक खाते खुलवाने के रास्ते आसान हुए हैं। यह कदम बच्चों की शिक्षा, अधिकार और भविष्य को सुरक्षित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रयास साबित हो रहा है।
बालकनामा रिपोर्टरः दामिनी

मेले की भीड़ देख, आँखों में उम्मीद लिए– कामकाजी बच्चे मनाते अपना त्योहार

बालकनामा रिपोर्टर: दामिनी
बातूनी रिपोर्टर: सोनिया

जयपुर के जयसिंहपुरा के सड़क एवं कामकाजी बच्चों के लिए शुक्रवार का दिन किसी त्योहार से कम नहीं होता। बच्चों का कहना है कि यह दिन उनके और उनके परिवार के लिए रोजगार कमाने का खास अवसर लेकर आता है। उनके अनुसार शुक्रवार, शनिवार और रविवार को मंदिरों और मस्जिदों में अधिक भीड़ होती है, जिससे कमाई के अवसर भी बढ़ जाते हैं। बालिका सोनिया और बालक कुमार (दोनों नाम परिवर्तित उम्र क्रमशः 14 व 13) ने बताया कि उन्हें इससे फर्क नहीं पड़ता कि वे जिस जगह खिलौने बेचते हैं या भिक्षा मांगते हैं, वह हिंदू मंदिर है या मुस्लिम मस्जिद, उनके लिए सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि परिवार को अधिक आय मिले। सोनिया कहती

है, ह्लजब कोई त्योहार लगातार तीन दिन चलता है तो हमारी खुशी और उम्मीदें भी चौगुनी हो जाती हैं, क्योंकि भीड़ अधिक होती है और कमाई भी ज्यादा होती है।ह्व पिछले शुक्रवार को भी ऐसा ही हुआ। उस दिन बारहवफात का पर्व था। बच्चों को पहले से पता था कि कर्बला और अन्य मस्जिदों में जुलूस और मेले के कारण भारी भीड़ होगी, इसलिए परिवार ने बच्चों को भी साथ ले जाकर खिलौने बेचने और भिक्षावृत्ति में मदद करने को कहा। बारहवफात के दिन तेज बारिश और पानीभराव के बावजूद बच्चे उम्मीद लेकर निकले। अगले दिन सोनिया ने मुस्कराते हुए बताया, ह्लकल मैंने 2000 रुपये कमाए। बारिश के कारण मेला नहीं लगा, वरना और भी पैसे बन जाते।ह्व उसने आगे बताया कि कई लोग, जो जुलूस में शामिल थे, उन्होंने खुशी से 50 से 100 रुपये तक दिए। भीड़ बहुत थी, डर भी था कि कहीं परिवार से बिछड़ न जाएँ, लेकिन आसपास अपने जैसे कई बच्चे और परिवार मौजूद थे। बालक कुमार ने कहा कि उस दिन हर तबके मतलब अमीर और गरीब के घरों के बच्चे आए थे, ह्लवे खिलौने खरीदते हैं, जिससे हमारी बिक्री भी बढ़ जाती है।ह्व अंत में सोनिया ने बताया कि उसने कमाए हुए पैसों में से कुछ घर पर दिए, कुछ अपनी जरूरत की चीजों के लिए रखे, और अब जब उसका बैंक खाता खुल गया है, तो कुछ पैसे उसमें भी जमा करेगी।

अनुशासन और नियमित उपस्थिति के लिए बच्चों को मिला सम्मान

रिपोर्टर: रितिका
बातूनी रिपोर्टर: खुशी

गुरुग्राम के चक्करपुर क्षेत्र की बस्ती में रहने वाले सड़क एवं कामकाजी बच्चों को स्कूल की ओर से एक विशेष सम्मान प्रदान किया गया, जिसने पूरे समुदाय में उत्साह का माहौल बना दिया। 28 अगस्त को आयोजित इस कार्यक्रम में उन बच्चों को आकर्षक टी-शर्ट वितरित की गईं, जिन्होंने पूरे वर्ष अनुशासन का पालन किया और नियमित रूप से स्कूल में उपस्थिति दर्ज कराई। जब बालकनामा रिपोर्टर रितिका बस्ती पहुँचीं, तो बच्चों के चेहरों पर खुशी और गर्व की चमक दिखाई दी। सातवीं कक्षा में पढ़ने वाली खुशी ने मुस्कुराते हुए बताया कि उन्हें स्कूल से टी-शर्ट मिली है, जो उन बच्चों को दी जाती है, जो हर दिन समय पर स्कूल पहुँचते हैं और कक्षा में अनुशासन बनाए रखते हैं। खुशी चेतना एनजीओ के सेंटर में शिक्षा प्राप्त करती है, जहाँ बच्चों को नियमित पढ़ाई, अनुशासन, समय की पाबंदी और पढ़ाई के प्रति गंभीर रहना सिखाया जाता है। खुशी के साथ उसकी सहपाठी प्रीति, जीत और जगन्नाथ को भी यह सम्मान मिला। खुशी ने आगे

बताया कि प्रीति विज्ञान में बहुत अच्छा काम करती है, इसलिए उसे भी टी-शर्ट प्रदान की गई। कक्षा में उन्हीं बच्चों का चयन किया गया, जिन्हें उपस्थिति और अनुशासन के आधार पर उत्कृष्ट माना गया। इस सम्मान को पाकर बच्चों का मनोबल और बढ़ गया है। रिपोर्टर रितिका ने बच्चों को बधाई देते हुए कहा कि वे इसी तरह अनुशासन का पालन करते हुए रोज स्कूल जाएँ, पढ़ाई में मन लगाएँ और अपने भविष्य को मजबूत बनाएँ, क्योंकि नियमितता और अनुशासन ही जीवन की सबसे बड़ी कुंजी है।

मजबूरी या लापरवाही? काम पाने के लिए बच्चे बढ़वा रहे हैं आधार कार्ड में उम्र

बातूनी रिपोर्टर चांदनी व रिपोर्टर किशन

दिन पर दिन समय बीतता जा रहा है और बच्चे बड़े हो रहे हैं, परंतु वे आगे क्या कर रहे हैं यह जानने के लिए बालकनामा पत्रकार ने नोएडा सेक्टर-5 के पास रहने वाले बच्चों से बातचीत की। इस दौरान 'बढ़ते कदम' की सदस्य 15 वर्षीय बालिका रूही (परिवर्तित नाम) ने बताया कि जिस बस्ती में वे रहते हैं, वहाँ यह आम बात है कि बच्चे उम्र के साथ तो बड़े होते जा रहे हैं, परंतु पढ़ाई छोड़कर काम की दुनिया में कदम रख रहे हैं। कई बच्चे देखने में 18 वर्ष से अधिक के लगते हैं, जबकि उनकी वास्तविक उम्र 14, 15 या 16 वर्ष होती है। बालिका ने बताया कि उनके इलाके के पास फैक्ट्री एरिया है, जहाँ अधिकांश बच्चे काम करने पहुंच रहे हैं। आप सोच रहे होंगे कि 18 साल से कम उम्र के बच्चे फैक्ट्री में कैसे काम कर रहे हैं? बच्चों के अनुसार, फैक्ट्री में भर्ती के समय

आधार कार्ड चेक किया जाता है, और बच्चे अपनी मजबूरी बताकर काम पर लग जाते हैं। कई सुपरवाइजर खुद बच्चों को सलाह देते हैं कि आधार कार्ड में उम्र बढ़वा लें, ताकि बिना परेशानी काम मिल सके। इसी कारण कई बच्चे उम्र बढ़वाकर फैक्ट्री में नौकरी कर रहे हैं। लेकिन जिनकी उम्र कम लगती है और जो आधार कार्ड में बदलाव नहीं करवा पाते, वे नजदीकी गली-मोहल्लों की दुकानों पर काम कर रहे हैं–जैसे कपड़ों की दुकान, परचून की दुकान, या छोटी मार्केट की अन्य दुकानें। दुकानदारों को बच्चों की उम्र से अधिक फर्क नहीं पड़ता, बस बच्चे काम अच्छे से कर लें, इसलिए वे बिना झिझक काम पर रख लेते हैं। बच्चों ने यह भी बताया कि जिन बच्चों को कहीं काम नहीं मिलता, वे खुद छोटी दुकान, ठेला या अन्य छोटा व्यवसाय शुरू कर लेते हैं। इस रिपोर्ट के माध्यम से यह साफ दिखाई देता है कि आज बच्चे किस तरह मजबूरी, जरूरत और परिस्थितियों के कारण कामकाज की ओर बढ़ रहे हैं। जब पत्रकार ने माता-पिता से बात की, तो उनका कहना था कि बच्चों का स्कूल में दाखिला तो करवाया हुआ है, लेकिन कई बच्चे स्कूल जाने से मना कर देते हैं और दिनभर घर या बाहर समय खराब करते हैं। गलत संगत में जाने का डर भी रहता है, इसलिए मजबूर होकर अभिभावक कहते हैं–'अगर पढ़ाई नहीं करनी तो काम ही कर लो।'

रातों में कबाड़ा, दिन में थकान: मजबूरी में बच्चे, करते है काम

बातूनी रिपोर्टर साहिल व रिपोर्टर किशन

हमने जब भी बच्चों से सड़क और झुग्गी बस्तियों पर जाकर उनकी समस्याओं पर चर्चा की है, अधिकतर बच्चों ने बताया कि वे सुबह से शाम तक काम में जुटे रहते हैं। लेकिन सवाल यह है कि कुछ बच्चे रात-रात भर क्यों काम करते हैं, और सड़कों पर काम करते समय क्या वे खुद को सुरक्षित महसूस करते हैं? नोएडा सेक्टर-15 के पास रह रहे बच्चों से पत्रकारों ने बात की। वहीं रहने वाले 15 वर्षीय बालक ने बताया, 'हम झुग्गी बस्ती में अपने माता-पिता के साथ रहते हैं और पूरा परिवार कबाड़ा बीनकर ही गुजारा करता है। इस समय लगातार बारिश हो रही है, जिससे सब परेशान हैं। बारिश की वजह से हम अपने काम पर भी सही से नहीं जा पाते। कई बार निकलने की सोचते हैं, तो तेज बारिश आ जाती है, और फिर हम रुक जाते हैं। लेकिन जिस दिन हम काम पर नहीं जाते, उस दिन घर का चूल्हा भी नहीं जल पाता, इसलिए मजबूरी में रोजाना जाना पड़ता है।' उसने आगे बताया, 'कुछ महीने पहले तक हम सुबह-सुबह कबाड़ा बीनने के लिए निकलते थे, लेकिन बारिश और तेज धूप की वजह से बहुत दिक्कत होती है। अब हमारी बस्ती के ज्यादातर लोग और बच्चे रात के समय ही निकलते हैं। हम 15 से 20 लोगों का एक ग्रुप बनाकर बाजारों, गलियों और मोहल्लों में कबाड़ा ढूंढने जाते हैं। हम शाम 6 बजे निकलते हैं और रात के करीब 3 बजे घर लौटते हैं। हमें गत्ता, प्लास्टिक, लोहे समेत कई तरह का कबाड़ा मिल जाता है।' रात में काम करने के दौरान आने वाली मुश्किलों का ज़िक्र करते हुए उसने कहा, 'सबसे बड़ी दिक्कत पुलिस की होती है। पुलिस वाले हमें रोक लेते हैं, तरह-तरह के सवाल पूछते हैं और हमारी भरी बोरियों को जमीन पर गिराकर चेक करते हैं, जैसे हम कुछ चोरी कर रहे हों। हम समझाते हैं कि हम कबाड़ा बीनते हैं, पर वे अक्सर हम पर भरोसा नहीं करते और हमें चोर समझते हैं। कई बार हमें मजबूरी में अपना पूरा सामान खोलकर दिखाना पड़ता है।' उस बालक ने यह भी बताया कि सिर्फ पुलिस ही नहीं, बल्कि रात में नशा करने वाले और शरारती तत्व भी उन्हें बहुत परेशान करते हैं। 'कई बार ऐसे लोग कबाड़ा छीन लेते हैं, पैसे मांगते हैं, और अकेले होने पर हमें देना पड़ता है। अगर हम ज्यादा लोग साथ हों, तो थोड़ा डर कम रहता है, लेकिन कई बार ये लोग मारपीट भी कर देते हैं। इन परेशानियों के बावजूद, रोजाना कमाई के लिए काम पर जाना पड़ता है।'

चक्करपुर की सुमी ने जीती ड्राइंग प्रतियोगिता, स्कूल ने किया पुरस्कारित

रिपोर्टर - रितिका
बातूनी रिपोर्टर - सुमी

शिक्षक दिवस के अवसर पर चक्करपुर (गुरुग्राम) के एक स्कूल में ड्राइंग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में बस्ती के कई बच्चों ने उत्साह के साथ भाग लिया और अपनी कला प्रतिभा को प्रदर्शित किया। इन्हीं में से सुमी नाम की बच्ची ने अपनी शानदार ड्राइंग के दम पर प्रथम स्थान हासिल किया। बालकनामा की रिपोर्टर रितिका जब चक्करपुर की बस्ती पहुँचीं, तो बच्चों ने खुशी-खुशी अपने अनुभव साझा किए। बातचीत के दौरान सुमी ने मुस्कुराते हुए बताया - 'दीदी, मुझे स्कूल से गिफ्ट मिला है। हमारी टीचर ने मेरा नाम ड्राइंग प्रतियोगिता में लिखा था। जब रिजल्ट आया तो मैं फर्स्ट आई। इसके बाद स्कूल की ओर से मुझे गिफ्ट दिया गया। गिफ्ट में पेंसिल, कटर, कॉपी और कई अन्य चीजें थीं।' सुमी ने आगे बताया कि प्रतियोगिता में सिर्फ उसे ही नहीं, बल्कि प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले सभी बच्चों को भी गिफ्ट दिए गए। इससे सभी बच्चों का उत्साह और बढ़ गया। रिपोर्टर रितिका ने सुमी की हौसला-अफजाई करते हुए कहा कि वह मन लगाकर पढ़ाई करे और अपनी ड्राइंग कला को और बेहतर बनाए। उन्होंने कहा - 'तुम बहुत अच्छा काम कर रही हो और आगे भी ऐसे ही मेहनत करती रहो।' ऐसी प्रतियोगिताएँ बच्चों का आत्मविश्वास बढ़ाती हैं और यह साबित करती हैं कि सही अवसर मिलने पर ये बच्चे अपनी मेहनत और प्रतिभा से हर किसी का दिल जीत सकते हैं।

CHILDREN'S HELP LINE NUMBERS

CONTACT THESE TOLL FREE NUMBERS IF YOU FACE ANY PROBLEM.

Child line Number
1098
Police Helpline Number
100

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

पहली बार स्कूल गतिविधि में शामिल हुईं बालिकाएँ, माताओं संग लगाया जीवन का पौधा

बालकनामा रिपोर्टर: दामिनी
बातूनी रिपोर्टर: कनिता

विद्यालय में अभिभावक बैठक के अवसर पर शिक्षा विभाग की ओर से 'एक पेड़ माँ के नाम 2.0' अभियान चलाया गया। इस पहल के तहत बच्चों ने अपनी माताओं के साथ विद्यालय प्रांगण में पौधे लगाए। इस दौरान बालकनामा रिपोर्टर दामिनी ने बच्चों से उनके अनुभव जाने। जयपुर के खार की ढाणी विद्यालय की बालिका कनिता (11वर्ष) ने खुशी जाहिर करते हुए बताया कि उसने पहली बार अपनी माताजी के साथ स्कूल की किसी गतिविधि में भाग लिया। बालिका ने बताया कि स्कूल में उसका दाखिला आसान नहीं था। घर की परिस्थितियों और विद्यालय की दूरी के कारण माता-पिता उसे भेजने

के लिए तैयार नहीं थे। लेकिन आज उसकी माता जी उसके साथ स्कूल गईं, अध्यापकों से बातचीत की और उन्होंने मिलकर पौधा लगाया। कनिता ने कहा कि यह उसके लिए बेहद खास अनुभव रहा, क्योंकि पहली बार वह स्कूल की किसी गतिविधि का हिस्सा बनी। इसी तरह बालिका शुभवंती (12 वर्ष) ने भी बताया कि उनकी माताजी भी उनके साथ थीं। इस बार उन्हें महसूस हुआ कि वे भी सच में स्कूल का हिस्सा हैं। उन्हें अच्छा लगा कि उनके माता-पिता भी उनकी पढ़ाई और गतिविधियों में शामिल हुए। बालिकाओं ने साझा किया कि वे पहले कभी स्कूल नहीं गए थे और डरती थीं, लेकिन आज गतिविधि में शामिल होकर उन्हें बहुत अच्छा लगा। कनिता और शुभवंती ने कहा कि जिस तरह माँ हमें पालती और बड़ा करती है, उसी तरह पेड़ भी हमें जीवनदायिनी हवा, छांव और फल देते हैं। अभिभावकों की सक्रिय भागीदारी ने इस अभियान को और खास बना दिया। बच्चों को उनकी सहभागिता के प्रतीक के रूप में प्रमाण पत्र भी प्रदान किए गए। इस पूरे कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य था माँ के सम्मान में पेड़ लगाना और धरती की रक्षा करना।

ढोलक की थाप पर जिम्मेदारी का बोझ

बालकनामा रिपोर्टर: दीपक
बातूनी रिपोर्टर: विरेन

बालकनामा रिपोर्टर दीपक ने जयपुर की विभिन्न कच्ची बस्तियों का दौरा किया। इस दौरान एक खबर सामने आई। जयपुर की मांग्यावास बस्ती में रहने वाला 10 वर्षीय बालक वीरेन (परिवर्तित नाम) कक्षा 5 का विद्यार्थी है। पढ़ाई के साथ-साथ वह ढोलक बजाने का काम भी करता है। अपनी इस कला से वह हर महीने लगभग 1000 से 1500 रुपये तक कमा लेता है। वीरेन बताता है कि स्कूल की छुट्टी होने के बाद या त्योहारी छुट्टियों में वह अपनी मां और चाची के साथ अलग-अलग कार्यक्रमों में ढोलक बजाने जाता है, जैसे तीज, त्योहार, शादी-विवाह और अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रम। कुछ समय पहले वीरेन ने बैंक में अपना खाता भी खुलवा लिया है और अब वह अपनी मेहनत की कमाई नियमित रूप से बैंक में जमा करने लगा है। वह बहुत सोच-समझकर इन पैसों का इस्तेमाल करता है। कभी अपने लिए नई ड्रेस खरीदता है, तो कभी अपनी छोटी बहन-भाइयों के लिए कॉपियाँ, ड्राइंग बुक्स या छोटे-छोटे उपहार लाता है। परिवार के

छोटे उत्सवों जैसे जन्मदिन और त्योहारों में भी इन पैसों से मदद कर देता है। जब रिपोर्टर ने पूछा कि वह आगे इन पैसों का क्या करेगा, तो वीरेन ने मासूम लेकिन समझदारी भरा जवाब दिया कि इन पैसों को जोड़कर जब जरूरत पड़ेगी तभी वह अपने परिवार की मदद करेगा। आज जहां कई बच्चे सिर्फ खेलने-कूदने में समय बिताते हैं, वहीं वीरेन जैसा बच्चा यह साबित करता है कि मेहनत, जिम्मेदारी और बचत की भावना उम्र की मोहताज नहीं होती।

मेले में झूला लगाया, कमाई से ट्यूशन और घर का सहारा बना प्रीतम

बालकनामा रिपोर्टर: दामिनी
बातूनी रिपोर्टर: प्रीतम

जयपुर में त्यौहारों के दौरान मंदिरों के बाहर लगने वाले मेलों में तरह-तरह के झूले लगाए जाते हैं। जयसिंहपुरा खोर बस्ती में रहने वाले 15 साल के बालक प्रीतम (परिवर्तित नाम) के लिए यह मेला उम्मीद और खुशियों से भरा रहा। प्रीतम कक्षा 10वीं का छात्र है और प्रतिदिन विद्यालय भी जाता है। उसने बताया कि मंदिर के पास उनका पुराना चकरी वाला झूला, जो लंबे समय से बंद पड़ा था, उसे दोबारा ठीक करके खड़ा किया और बच्चों को झुलाया। गणेश चतुर्थी और

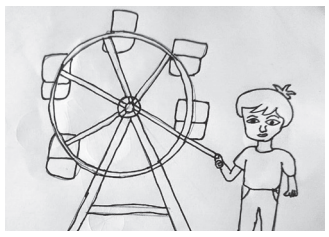

तेजा दशमी के दौरान मंदिर में खूब भीड़ रही और बच्चे बारी-बारी से झूला झूलते रहे। प्रीतम ने बताया, 'मैं प्रति व्यक्ति 20 रुपये लेता था और गणेश जी के मेले में एक दिन में लगभग 4,000 रुपये आए। तेजा दशमी के मेले में प्रति व्यक्ति 50 रुपये लिए और उस दिन लगभग 12,000 रुपये कमाए। इस तरह दोनों मेलों से कुल 16,000 रुपये की कमाई हुई।' उसने इन पैसों से अपने लिए कपड़े खरीदे और कुछ पैसे घर पर भी दिए। प्रीतम बताता है कि झूला बड़ा होने के कारण वह उसे रास्ते में ही खड़ा कर ताले से बंद कर देता है, ताकि सुरक्षित रहे। सामान्य दिनों में झूले पर कोई नहीं झूलता, लेकिन त्यौहारों और मेलों में अच्छी भीड़ हो जाती है। बच्चा सिर्फ झूला ही नहीं चलाता, बल्कि पढ़ाई को भी प्राथमिकता देता है। वह रोज स्कूल जाता है और कहता है, 'इस बार कमाए गए पैसे मैं 10वीं बोर्ड परीक्षा की ट्यूशन पर खर्च करूंगा, ताकि अच्छे नंबरों से पास हो सकूं।'

स्वच्छ पानी से वंचित मासूम जिंदगियां

बालकनामा रिपोर्टर - रितिका
बातूनी रिपोर्टर - राहुल

गुरुग्राम के सेक्टर-62 स्थित जे एम डी झुग्गी बस्ती में जब बालकनामा की रिपोर्टर रितिका पहुँचीं, तो बच्चों के चेहरों पर मासूम मुस्कान के साथ उनकी परेशानियाँ भी साफ दिखाई दे रही थीं। बातचीत के दौरान 14 वर्षीय राहुल उनके पास आकर बोला कि, हमारे यहाँ जो पानी आता है, उसमें मिट्टी निकलती है, हम उसे न पी सकते हैं, न खाना बना सकते हैं और न ही नहाने या कपड़े धोने में इस्तेमाल कर सकते हैं। रितिका ने पूछा कि क्या तुम लोगों ने बस्ती के मालिक को बताया नहीं, इस पर राहुल ने उदास होकर जवाब दिया कि बताया है, लेकिन वह सुनते ही नहीं, कहते हैं कि अगर परेशानी है तो बस्ती खाली कर दो, हम कुछ नहीं करवा सकते। यह सुनकर रितिका सोच में पड़ गईं कि आखिर बच्चों और उनके परिवारों के पास विकल्प ही क्या है। जब उन्होंने आगे पूछा कि क्या रोज ऐसा ही होता है, तो राहुल ने बताया कि हाँ, रोज सुबह से शाम तक पानी में मिट्टी निकलती रहती है, सब लोग परेशान हैं, लेकिन करें भी तो क्या, हमारे पास दूसरा घर लेने के पैसे नहीं हैं। राहुल की बात सुनकर बाकी बच्चे भी सिर हिलाने लगे। किसी ने कहा कि माँ रोज पानी छानती हैं, फिर भी

मिट्टी रहती है, और एक बच्चा बोला कि कभी-कभी पेट में दर्द भी हो जाता है। रितिका कहती हैं कि यह समस्या सिर्फ मिट्टी वाले पानी की नहीं, बल्कि गरीबी, लापरवाही और असमानता की कहानी है, जहाँ बच्चे मुस्कुराते जरूर हैं, लेकिन उनकी जिंदगी की मुश्किलें कभी मिट्टी की तरह नीचे नहीं बैठतीं। यह खबर बताती है कि स्वच्छ पानी और बेहतर जीवन परिस्थितियाँ हर बच्चे का अधिकार हैं और जब तक इन बस्तियों में बुनियादी सुविधाएँ नहीं पहुँचेंगी, तब तक ये बच्चे मुस्कुराते हुए भी अपनी परेशानियों के साथ जीने को मजबूर रहेंगे।

मेहनत का फल, गुरुग्राम की बस्ती के अली ने स्कूल में हासिल किया तीसरा स्थान

रिपोर्टर - राज किशोर
बातूनी रिपोर्टर - अली

सड़क और कामकाजी बच्चों के लिए शिक्षा तक पहुँचना आसान नहीं होता, लेकिन मेहनत और लगन से ये बच्चे भी अपनी पहचान बना रहे हैं। ऐसा ही उदाहरण गुरुग्राम की पड़ला धनी बस्ती के रहने वाले अली खान ने पेश किया है। हाल ही में अली ने अपने स्कूल में तीसरा स्थान प्राप्त किया और पुरस्कार भी जीता। बालकनामा के रिपोर्टर राज किशोर जब पड़ला धनी कॉन्टैक्ट प्वाइंट पहुँचे, तो बच्चों ने गर्व से बताया कि अली की मेहनत रंग लाई है। अली खान, जो मूल रूप से बिहार के रहने वाले हैं, अपने माता-पिता और भाई-बहनों के साथ गुरुग्राम की इस बस्ती में रहते हैं। अली बताते हैं कि जब उनका परिवार गाँव से गुरुग्राम आया था, तब हालात बेहद कठिन थे। 'भैया, यह सफर आसान नहीं था। घर का किराया देना मुश्किल था, माता-पिता को नियमित काम नहीं मिलता था और पढ़ाई का खर्च उठाना भी संभव नहीं था,' अली ने कहा। आर्थिक परेशानी के कारण अली पढ़ाई से दूर हो गया और अक्सर बस्ती में ही घूमता रहता था। इसी दौरान उसकी मुलाकात चेतना संस्था के कार्यकर्ताओं से हुई। संस्था के कार्यकर्ताओं ने अली और उसके माता-पिता को पढ़ाई के महत्व के बारे में समझाया और उसे सेंटर आने के लिए प्रोत्साहित किया। पहले अली को संकोच था, लेकिन जब उसने देखा कि उसके जैसे कई बच्चे वहाँ पढ़ रहे हैं, तो वह भी नियमित रूप से आने लगा। संस्था ने न सिर्फ पढ़ाई का माहौल दिया, बल्कि कॉपी-किताब और खेलने की सामग्री भी उपलब्ध कराई। कुछ समय बाद अली का एडमिशन सरकारी स्कूल में कराया गया और उसने मन लगाकर पढ़ाई शुरू की। अली ने मेहनत और नियमित अभ्यास के दम पर परीक्षा में तीसरा स्थान प्राप्त किया। पुरस्कार मिलने के बाद उसने कहा, 'आज मैं बहुत खुश हूँ कि मैंने मेहनत की और उसका फल पाया। अब मेरा सपना है कि आगे और अच्छे अंक लाऊँ और अपने परिवार का सहारा बनूँ।' अली की यह सफलता साबित करती है कि अगर बच्चों को अवसर, मार्गदर्शन और भरोसा दिया जाए, तो वे भी किसी से पीछे नहीं रहते।

कबाड़ चुनते हुए घायल हुआ मासूम, मदद को आगे आई मानवता

बातूनी रिपोर्टर शाहबाज व रिपोर्टर किशन

सड़क पर काम करने वाले बच्चों को अक्सर बेहद कठिन परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है। नोएडा दौरे के दौरान पत्रकार की मुलाकात एक 14 वर्षीय बालक टोनी (परिवर्तित नाम) से हुई। बातचीत के दौरान पत्रकार की नजर बालक की टांग पर पड़ी, जो बुरी तरह घायल थी और जिस पर मक्खियाँ बैठ रही थीं। पत्रकार ने चिंता जताते हुए उससे पूछा कि यह कैसे हुआ। बालक ने बताया, 'हम नोएडा सेक्टर 15 के पास की बस्ती में अपने माता-पिता के साथ रहते हैं। हमारा पूरा काम कबाड़ बीनने और उसे छांटने का है। एक दिन हम मार्केट इलाके में कबाड़ लेने गए थे। जब बोरी भर जाती है, तो हम उसे किसी सुरक्षित जगह रख देते हैं और बाद में वापस ले आते हैं। उस दिन भी जब हमारी बोरी भर गई, तो हम उसे दूसरी बोरी में डाल रहे थे। तभी वहाँ घूम रहे एक जंगली कुत्ते ने अचानक हमारी टांग पर काट लिया। हम जोर-जोर से रोने और चिल्लाने लगे, लेकिन कुत्ता छोड़ने का नाम ही नहीं ले रहा था। उसने टांग का काफी मांस निकाल दिया था और हालत बहुत खराब हो गई थी।' बालक ने आगे बताया, 'तभी एक दयालु दीदी ने हमें देखा। उन्होंने तुरंत डंडा और पत्थर मारकर कुत्ते को भगाया और हमारी मदद के लिए आगे आईं। उन्होंने हमें पास के डॉक्टर के पास ले जाकर इलाज करवाया। दवा, इंजेक्शन और डॉक्टर की पूरी फीस भी उन्होंने ही भरी। यहां तक कि बाद में फल लेकर दी और हमें घर तक छोड़ने भी गईं। उन्होंने कुछ पैसे देते हुए कहा कि इलाज पूरा करवाना। हम रोज डॉक्टर के पास जाते रहे, जैसा उन्होंने कहा था।ह आँखों में चमक के साथ बालक बोला, 'उस दिन वह दीदी हमारे लिए भगवान बनकर आईं। अगर वह नहीं आतीं, तो पता नहीं क्या हो जाता। शायद कुत्ता और काटता, और हम बच नहीं पाते। हम तो अपने परिवार का पेट पालने के लिए कबाड़ उठाते हैं, यही हमारा सहारा और यही हमारा काम है।'

खेल का मैदान बना टोटकों का अड्डा, बच्चों की जान पर खतरा

ब्यूरो रिपोर्ट

कहते हैं कि स्वास्थ्य के लिए खेलना और शरीर को सक्रिय रखना बहुत आवश्यक होता है। बच्चे भी इसी कारण रोज खेलते हैं, जिससे उनका शरीर स्वस्थ रहता है और वे खेलते-खेलते थक भी जाते हैं। हम इस विषय पर इसलिए बात कर रहे हैं क्योंकि नोएडा की एक बस्ती में जब हमारी टीम बच्चों से मिली, तो उन्होंने दुख भरे शब्दों में अपनी परेशानी बताई। बच्चों ने कहा कि हमारी बस्ती में लगभग डेढ़ सौ से अधिक बच्चे रहते हैं। बस्ती के पास एक गांव है और वहीं पास में एक पार्क भी है, जबकि आसपास और कहीं कोई पार्क नहीं है। दूसरा पार्क 2 से 3 किलोमीटर की दूरी पर पड़ता है। जब भी हमारे मन में खेलने का आता है, तो हमें पार्क का ख़्याल आता है, लेकिन दूर होने की वजह से हम वहां खेलने नहीं जा पाते और हमारे माता-पिता भी जाने से मना कर देते हैं। बस्ती के बगल में सरकारी जमीन का एक बड़ा मैदान है, जहां बस्ती और गांव के बच्चे बैट-बॉल और अन्य खेल खेलने के लिए आते हैं। लेकिन अब इस मैदान की एक और समस्या शुरू हो गई है। आसपास रहने वाले लोग और आने-जाने वाले राहगीर खाली मैदान देखकर वहां अपने घर की परेशानियों, टोटका या भूत-प्रेत जैसी समस्याओं को दूर करने के लिए नींबू, सुई, चावल, नारियल, चावल के लड्डू, दाल, हवन की राख जैसी चीजें छोड़ जाते हैं। जब हम बच्चे खेल रहे होते हैं, तो हमारी नजर इन टोटकों पर नहीं जाती और कई बार बच्चे उस पर चढ़ जाते हैं। सबसे बड़ी समस्या तब होती है जब छोटे-छोटे बच्चे–3, 4, 5 साल के–इन्हें पहचान नहीं पाते और उठाकर मुंह में डाल लेते हैं। इससे जो समस्या दूसरों के घर की होती है, उसका डर हमारे घरों तक आ जाता है। कई बच्चे फिर अजीब हरकतें करने लगते हैं और परिवार वाले मजबूर होकर तांत्रिकों के पास जाते हैं, ताबीज बनवाते हैं और पैसा खर्च करते हैं। बच्चों ने बताया कि कई तांत्रिक लोग इन हालात का फायदा उठाकर लोगों से पैसा लेते रहते हैं, पर इलाज के नाम पर कोई फायदा नहीं होता।

पानी की किल्लत से परेशान सड़क एवं कामकाजी बच्चे

बालकनामा रिपोर्टर: राज किशोर
बातूनी रिपोर्टर: गोलू

जब बालकनामा के रिपोर्टर राजकिशोर गुरुग्राम के पलड़ा बस्ती पहुँचे तो वहाँ के बच्चों ने अपनी सबसे बड़ी परेशानी पानी की कमी बताई। बच्चों ने बताया कि बस्ती में सबमर्सिबल तक नहीं लगा है, जिसके कारण पानी की समस्या बहुत गंभीर हो चुकी है। उनके अनुसार रोज पानी टैंकर से आता है, लेकिन उसका कोई तय समय नहीं होता। कभी सुबह आ जाता है, तो कभी दोपहर या शाम को। पूरी बस्ती में लगभग 400 से 500 लोग रहते हैं और नहाने, बर्तन धोने, कपड़े धोने व खाना बनाने तक के लिए सभी को एक ही टैंकर के पानी पर निर्भर रहना पड़ता है। बच्चों का कहना है कि टैंकर का पानी जल्दी खत्म हो जाता है और कई बार उन्हें नहाने तक का पानी नहीं मिल पाता। एक बच्चा उदास होकर बोला कि जब पानी नहीं होता, तो उन्हें बिना नहाए स्कूल जाना पड़ता है और वहाँ बच्चे उनका मजाक उड़ाते हैं और कहते हैं कि शरीर से बदबू आ रही है। बच्चों ने बताया कि जब उन्होंने यह समस्या अपनी टीचर को बताई, तो उन्होंने केवल इतना कहा कि रोज नहाकर आओ, लेकिन बच्चे समझाते हैं कि चाहकर भी रोज नहीं नहा सकते क्योंकि बस्ती में पानी ही नहीं होता। यह खबर बताती है कि पलड़ा बस्ती के बच्चों की लड़ाई केवल पढ़ाई की नहीं है, बल्कि पानी की भी है। जहाँ पानी हर इंसान की जरूरत है, वहीं इन बच्चों के लिए यह रोज की चिंता और संघर्ष बन गया है।

बारिश के बाद बढ़ी मुश्किलें, चक्करपुर बस्ती में बच्चे बुखार से बेहाल

बालकनामा रिपोर्टर - रितिका
बातूनी रिपोर्टर - ज्योति

बरसात के मौसम के बाद गुरुग्राम की चक्करपुर बस्ती में हालात बेहद चिंताजनक हो गए हैं। जगह-जगह जमा गंदा पानी, कीचड़ और कूड़े-कचरे के ढेर ने बच्चों की सेहत पर गंभीर असर डाला है। कई बच्चे इन दिनों टाइफाइड और चिकनगुनिया जैसी बीमारियों से पीड़ित हैं। बालकनामा की रिपोर्टर रितिका ने जब बस्ती का दौरा किया तो बच्चों की बातचीत में उनकी तकलीफ साफ झलकती दिखाई दी। बस्ती की ही एक बच्ची ज्योति ने बताया कि उनके यहाँ बहुत सारे बच्चों को टाइफाइड हो गया है, जिसके कारण वे कई-कई दिनों तक स्कूल नहीं जा पा रहे और बिस्तर पर पड़े रहने को मजबूर हैं। तेज बुखार, शरीर में दर्द, भूख न लगना और कमजोरी के चलते बच्चे न पढ़ाई कर पा रहे हैं और न ही खेलकूद में हिस्सा ले पा रहे हैं, जिसके कारण कई बच्चे हफ्तों से स्कूल से अनुपस्थित हैं और उनका बचपन जैसे थम-सा गया है। स्थिति केवल बच्चों तक सीमित नहीं है, बल्कि परिवारों की मुश्किलें भी बढ़ गई हैं। बस्ती के अधिकांश माता-पिता दिहाड़ी मजदूरी करते हैं, लेकिन बच्चों की बीमारी के कारण उन्हें बार-बार काम छोड़कर घर पर रहना पड़ रहा है, जिससे उनकी कमाई पर असर पड़ा है और दवाइयाँ व इलाज उनके लिए आर्थिक बोझ बन गए हैं। स्थानीय लोगों ने बताया कि बारिश के बाद पूरी बस्ती में पानी भर जाता है और निकासी की कोई उचित व्यवस्था नहीं है, जिसके कारण गंदगी और कीचड़ में मच्छर पनप रहे हैं और चिकनगुनिया जैसी बीमारियाँ तेजी से फैल रही हैं। साथ ही साफ पीने का पानी और पौष्टिक भोजन न मिल पाने से बच्चे टाइफाइड का शिकार हो रहे हैं। लोगों का कहना है कि यदि सफाई और जल निकासी की उचित व्यवस्था जल्द नहीं की गई तो बीमारियों का खतरा और बढ़ सकता है। विशेषज्ञों के अनुसार समय पर सफाई, मच्छरों का नियंत्रण, दवाइयों की उपलब्धता और बच्चों के स्वास्थ्य की नियमित जांच बेहद जरूरी है। चक्करपुर बस्ती की यह स्थिति याद दिलाती है कि स्वच्छता और स्वास्थ्य जागरूकता केवल सुविधा नहीं, बल्कि बच्चों के भविष्य की सुरक्षा से जुड़ी अहम ज़िम्मेदारी है, क्योंकि जब तक साफ वातावरण और बेहतर स्वास्थ्य सेवाएँ उपलब्ध नहीं होंगी तब तक बच्चे बीमारी और मजबूरी के बीच ही अपना बचपन बिताने को मजबूर रहेंगे।

शिक्षा की रोशनी में बदल रही गुरुग्राम की झुग्गियों के बच्चों की ज़िंदगी

रिपोर्टर: रितिका
बातूनी रिपोर्टर: जुबैर

झुग्गियों की संकरी गलियों में जब खेलकूद की उम्र के बच्चे कबाड़ बीनते नजर आते हैं, तो यह दृश्य देख कर दिल भर जाता है। लेकिन इन्हीं गलियों में अब शिक्षा एक नई रोशनी बनकर बच्चों की ज़िंदगी बदल रही है। बालकनामा की रिपोर्टर रितिका जब इस क्षेत्र में पहुँचीं, तो उन्होंने कई ऐसे छोटे बच्चे देखे जो दिन का आधा समय कबाड़ इकट्ठा करने में बिताते हैं। उन्हीं में से एक है जुबैर, जो अपनी मासूमियत और आत्मविश्वास के साथ अपनी कहानी सुनाता है। वह बताता है, ' हम चेतना संस्था के सेंटर में दोपहर 1 बजे तक पढ़ाई करते हैं। उसके बाद कबाड़ चुनने निकलते हैं। बाकी बच्चों को देखकर मैंने भी कबाड़ा चुनना शुरू किया। जो पैसे मिलते हैं, उन्हीं से घर का खर्च

चलता है।' जुबैर अपने दोस्तों परिवर्तित नाम -अजय और अर्जुन (दोनों बिहार से) के साथ कबाड़ इकट्ठा करता है। ये बच्चे अपनी कमाई से घर का सामान खरीदते हैं और परिवार की मदद करते हैं। पहले जुबैर और उसके दोस्त पढ़ाई से दूर थे, लेकिन चेतना संस्था से जुड़ने के बाद उनकी ज़िंदगी में बदलाव आने लगा है। अब वे सेंटर में गिनती, हिंदी पढ़ना-लिखना सीख रहे हैं और खेलों में भी हिस्सा लेते हैं। रितिका बताती हैं कि अब जुबैर साफ-सफाई का ध्यान रखने लगा है और पढ़ाई को लेकर उत्साहित रहता है। उसकी आँखों में एक नया आत्मविश्वास दिखाई देता है। वह मुस्कुराते हुए कहता है, 'अब मैं रोज सेंटर इसलिए आता हूँ क्योंकि पढ़-लिखकर बड़ा होकर अच्छा काम करना चाहता हूँ।' इन बच्चों की कहानी यह साबित करती है कि कठिन परिस्थितियों में भी शिक्षा और उम्मीद की ताकत से बदलाव संभव है। आज ये बच्चे न सिर्फ.अपने परिवार की जिम्मेदारी निभा रहे हैं, बल्कि उज्जवल भविष्य के लिए पढ़ाई को भी प्राथमिकता दे रहे हैं।

पटाखों से बढ़ते हादसे, बस्ती के बच्चों ने साधी सावधानी

बालकनामा रिपोर्टर: राजकिशोर
बातूनी रिपोर्टर: राकी असलम

जहाँ दीपावली से बाजारों और दुकानों में पटाखों की रौनक बढ़ती जा रही है वहीं पटाखों की चमक कुछ बच्चों के लिए खतरा भी बन रही है। बालकनामा के रिपोर्टर राजकिशोर जब गुरुग्राम की पलड़ा बस्ती पहुँचे, तो वहाँ के बच्चों ने दीपावली से जुड़ा एक दर्दनाक हादसा साझा किया। बच्चों के अनुसार, उनके दोस्त अहमद, उम्र 12 वर्ष, को पटाखा जलाते समय गंभीर चोट लग गई। बच्चों ने बताया कि उस दिन वे सभी मिलकर पटाखे जला रहे थे। अहमद ने एक बम जलाया, लेकिन वह फूटा नहीं। जब वह यह देखने गया कि क्या

हुआ, तभी बम अचानक फट गया और उसके हाथ में गहरी चोट आ गई। बच्चों का कहना है कि यह कोई अकेली घटना नहीं है। इससे पहले भी कई बच्चे पटाखे जलाते समय घायल हो चुके हैं। किसी के हाथ में जलन हुई, किसी के कपड़े जल गए और कई बार आसपास आग लगने का खतरा भी बन गया। यह सब देखकर बस्ती के बच्चों ने अब फैसला किया है कि वे खतरनाक पटाखों से दूरी बनाएंगे और सुरक्षित तरीके से दीपावली मनाएंगे। एक 11 वर्ष के बच्चे ने कहा कि अब वे पटाखे नहीं जलाएँगे, बल्कि दीपक और रोशनी से त्यौहार मनाएँगे, ताकि किसी को कोई चोट न लगे। यह घटना हमें याद दिलाती है कि त्योहार मनाते समय खुशियों के साथ सावधानी भी जरूरी है, क्योंकि छोटी सी गलती एक बड़ा हादसा बन सकती है।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

बारिश से भरे घर, निकले सांप और डरे बच्चे, बस्ती की बढ़ीं मुश्किलें

बातूनी रिपोर्टर व रिपोर्टर किशन

झुग्गी-बस्तियों में रहना कोई मामूली बात नहीं है। सड़क और कामकाजी बच्चे जब बस्तियों में रह रहे हैं, तो इसकी वजह उनकी मजबूरियां हैं। नोएडा सेक्टर 76 के पास की बस्तियों में भारी बारिश के दौरान जब पत्रकार पहुँचे तो बच्चे काफी चिंतित दिखे और कई की आँखें तथा स्वास्थ्य ठीक नहीं थे। बस्ती में रहने वाली 14 वर्षीय बालिका रूबी (परिवर्तित नाम) ने बताया कि इस समय बारिश बहुत हो रही है और जब भी तेज बारिश होती है तो घरों में पानी भर जाता है। पानी भरने के कारण जमीन के अंदर से सांप और कीड़े जैसे जीव बाहर निकल आते हैं और घरों तक पहुँच जाते हैं। हमारे घर में भी रोजाना कई सांप निकल रहे हैं।

डर के कारण परिवार न तो सही से खाना बना पा रहा है और न ही आराम से सो पा रहा है, क्योंकि कई बार सांप बिस्तर या चूल्हे और गैस के पास भी पहुँच जाते हैं। कभी-कभी हमें पता ही नहीं चलता और सांप हमारे बगल में बैठा होता है। जैसे ही नजर पड़ती है, डर से दिल की धड़कन तेज हो जाती है। 12 वर्षीय एक अन्य बालिका सिमरन (परिवर्तित नाम) ने बताया कि उनके घर में भी सांप निकल चुका है। माता-पिता कई बार सांप को पकड़ लेते हैं, पर जब पकड़ में नहीं आता तो मजबूरी में उसे मारना पड़ता है, क्योंकि डर होता है कि कहीं काट न ले। कई बार सांप को मारने के बाद उन्हें जला भी देते हैं। डर इतना बढ़ गया है कि घर के लोग पिछले तीन दिन से बीमार पड़ गए हैं। बच्चों की बातें सुनने के बाद पत्रकारों ने समझाया कि चाहे कोई भी जानवर या जीव छोटा हो या बड़ा, उसे मारना गलत है। अगर घर में सांप आए तो धुआँ करने से वह आसानी से भाग जाता है और किसी को नुकसान नहीं होता। 11 वर्षीय एक बालक अब्दुल (परिवर्तित नाम) ने बताया कि उसके पिता सांप को पकड़कर दूर छोड़ आते हैं और उसे मारते नहीं हैं।

होदी की गंदगी बनी बच्चों की सेहत के लिए खतरा

रिपोर्टर - राज किशोर
बातूनी रिपोर्टर - अधूरी

बालकनामा अखबार के रिपोर्टर राज किशोर जब गुरुग्राम की घाट बस्ती पहुँचे, तो वहाँ के बच्चों ने अपनी गंभीर परेशानी साझा की। बच्चों का कहना है कि बस्ती के पास बनी होदी (तालाब) का पानी अब इतना गंदा हो चुका है कि उसी में नहाने से उन्हें खुजली और अन्य बीमारियाँ होने लगी हैं। बच्चों ने बताया कि कई लोग होदी में चावल, बर्तन धोने का पानी और तरह-तरह का कचरा फेंक देते हैं। यही नहीं, लोग उसी पानी में बर्तन भी धोते हैं, जिसका गंदा झाग और मैल सीधे पानी में मिल जाता है। इस कारण पानी बिल्कुल दूषित हो गया है। जब बच्चे पड़ोसियों को ऐसा न करने के लिए समझाते हैं, तो उन्हें उल्टा डांट-फटकार और चिल्लाहट का सामना करना पड़ता है। स्थिति बिगड़ने पर बच्चों ने बस्ती के ठेकेदार से शिकायत भी की। उन्होंने मांग की कि होदी की नियमित सफाई हो और गंदगी रोकने के लिए सख़्त कदम उठाए जाएँ, ताकि बच्चे और बस्ती के लोग बीमार न पड़ें। रिपोर्टर राज किशोर ने भी मौके पर जाकर देखा कि लोग उसी होदी में नहा रहे थे, बर्तन धो रहे थे और गंदा पानी वहीं बहा रहे थे। पानी में शैंपू और साबुन का झाग साफ तैरता दिखाई दे रहा था। स्थानीय लोगों और बच्चों का कहना है कि अगर सफाई और रोकथाम के उपाय जल्द नहीं किए गए, तो स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ और बढ़ जाएँगी। इसलिए उन्होंने अपील की कि लोग होदी में गंदगी न फैलाएँ और प्रशासन इस समस्या पर तुरंत ध्यान दे।

बस्ती में नन्हे परिंदे वेन के आने से बच्चों में आ रहे हैं बदलाव

बातूनी रिपोर्टर सोनी व रिपोर्टर किशन

जीवन में आगे बढ़ने के लिए शिक्षा हमारा सबसे बड़ा सहारा और एक सशक्त हथियार है। यदि हम इस हथियार का इस्तेमाल नहीं करते, तो जीवन में हमेशा पीछे रह जाते हैं। भारत के हर राज्य में आज भी लाखों बच्चे ऐसे हैं जो शिक्षा से वंचित हैं और स्कूल जाना ही नहीं चाहते या नहीं जा पाते। क्या यह सही है? इसी सवाल का जवाब जानने के लिए एक पत्रकार नोएडा की एक बस्ती में पहुंचे। बस्ती में पहुँचकर पत्रकार की नजर कुछ मासूम छोटे बच्चों और 14-15 वर्ष की उम्र के किशोरों पर पड़ी। उनसे बातचीत में यह जानने का प्रयास किया गया कि क्या इस बस्ती के सभी बच्चे स्कूल जाते हैं? बच्चों ने एक-एक करके अपनी बात रखी। इस बस्ती में लगभग 200 परिवार झुग्गियों में किराए से रहते हैं और ज्यादातर लोग कबाड़ बीनने या उससे जुड़े काम करते हैं। यहाँ लगभग 300 बच्चे हैं, जिनकी उम्र 7 से 17 वर्ष के बीच है।

हैरानी की बात यह है कि इनमें से केवल लगभग 10 बच्चे ही ऐसे हैं जिनके माता-पिता शिक्षा के प्रति जागरूक हैं और उन्हीं का स्कूल में नियमित आना-जाना है। बस्ती में लगभग 40 बच्चों के पास आधार कार्ड तो है, लेकिन उसमें कई तरह की समस्याएँ हैं–जैसे नाम की गलत स्पेलिंग, उम्र ज्यादा लिखी होना, या सही पते की जानकारी न होना। इसी कारण उनका स्कूल में प्रवेश नहीं हो पा रहा। बस्ती की 14 वर्षीय बालिका नेहा (परिवर्तित नाम) ने बताया कि कुछ

माता-पिता इन समस्याओं को सुधारने की कोशिश कर रहे हैं, लेकिन कई परिवारों के पास पैसे नहीं हैं। उनका मानना है कि जब बच्चे पढ़ने के लिए जाते ही नहीं, तो आधार कार्ड सुधार कराने से क्या फायदा? इसलिए वे इस पर ध्यान नहीं देते।कई माता-पिता सुबह काम पर चले जाते हैं और देर शाम तक लौटते हैं। बच्चों पर ध्यान न देने की वजह से आधार कार्ड से जुड़े काम भी अधूरे रह जाते हैं। बच्चे दिनभर घरेलू काम, बाहर घूमना और बेवजह खेलते हुए समय बिताते हैं। खुशी की बात यह है कि अब इस बस्ती में 'नन्हे परिंदे' वेन नियमित रूप से आने लगी है। बच्चे इस वेन पर पढ़ने के लिए आने लगे हैं और चेतना संस्था के कार्यकर्ताओं ने 20 से अधिक बच्चों के स्कूल में दाखिले की प्रक्रिया पूरी करवा दी है। बाकी बच्चों के आधार कार्ड सुधार का काम जारी है, और उन्हें रोज वेन पर बुलाकर शिक्षा दी जा रही है। बच्चों ने बताया कि 'जब से वेन आनी शुरू हुई है, हम बहुत खुश हैं। अब अधिकतर बच्चे रोजाना पढ़ाई से जुड़ रहे हैं और बदलाव महसूस कर रहे हैं।' बस्ती में धीरे-धीरे सकारात्मक परिवर्तन देखने को मिल रहा है और बच्चे भी शिक्षा की महत्ता को समझने लगे हैं।

सड़क और कामकाजी बच्चे बने सुरक्षा की मिसाल

बालकनामा रिपोर्टरः दामिनी
बातूनी रिपोर्टरः पूनम

बालकनामा रिपोर्टर ने जयपुर की कच्ची बस्तियों का दौरा किया तो जानकारी मिली कि सड़क और कामकाजी बच्चे अब न केवल अपनी सुरक्षा के प्रति जागरूक हैं, बल्कि अन्य बच्चों की सुरक्षा में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। हाल ही में ऐसी दो घटनाएँ सामने आई हैं जो बच्चों की जागरूकता, संवेदनशीलता और साहस का उदाहरण प्रस्तुत करती हैं। आगरा रोड स्थित कच्ची बस्ती में रहने वाली बालिका पूनम (परिवर्तित नाम) ने अपने पड़ोस में रहने वाले 12 वर्षीय बच्चे को उसके माता-पिता के अत्याचार से बचाया। बच्चे की माँ उसे गंभीर रूप से मारती थी, यहाँ तक कि बिजली का करंट लगाने की भी कोशिश कर रही थी। पूनम ने समझदारी दिखाते हुए तुरंत 1098 चाइल्ड हेल्पलाइन पर कॉल किया और पूरी जानकारी दी। समय पर सहायता मिलते ही बच्चे को हिंसा से मुक्त कर सुरक्षित स्थान पर पहुँचाया गया। इसी तरह, जयसिंहपुरा खोर की आशी (परिवर्तित नाम) ने भी एक 14 वर्षीय बालक के लिए आवाज उठाई। बालक पर चोरी का झूठा आरोप लगाया गया था और पुलिस बिना जाँच के उसे थाने ले गई थी। आशी ने हिम्मत दिखाते हुए चाइल्ड हेल्पलाइन पर फोन किया और बताया कि पारिवारिक दुश्मनी के कारण बच्चे को झूठे आरोप में फँसाया जा रहा है। जानकारी मिलते ही चाइल्डलाइन टीम ने पुलिस से समन्वय कर बच्चे को रिहा करवाया। इन दोनों घटनाओं ने साबित किया है कि जब बच्चों को अपने अधिकारों और प्रक्रिया की जानकारी होती है, तो वे न केवल खुद की, बल्कि दूसरों की भी रक्षा कर सकते हैं।

मेट्रो स्टेशन के नीचे फूल बेचते बच्चे

बालकनामा रिपोर्टरः राजकिशोर
बातूनी रिपोर्टरः सुमित

बालकनामा रिपोर्टर राजकिशोर जब गुरुग्राम में रिपोर्टिंग के लिए निकले, तो सहारा मॉल के पास एमजी रोड मेट्रो स्टेशन के नीचे का दृश्य देखकर ठहर गए। वहाँ करीब 12-13 वर्ष की एक बच्ची गुलाब के फूल बेच रही थी। रिपोर्टर ने उससे बात करने की कोशिश की तो बच्ची मुस्कुराते हुए बोली कि भैया, एक फूल ले लो ना, घर में रखने के लिए अच्छा रहेगा या किसी को गिफ्ट देने के लिए भी। रिपोर्टर ने मुस्कुराकर पूछा कि फूल तो मैं जरूर लूँगा, लेकिन बताओ, इतनी छोटी उम्र में तुम यह काम क्यों कर रही हो, क्या कोई तुमसे यह काम करवाता है। बच्ची ने शांत स्वर में जवाब दिया कि नहीं, मुझसे कोई जबरदस्ती नहीं करता, मैं अपनी मजी से यह काम

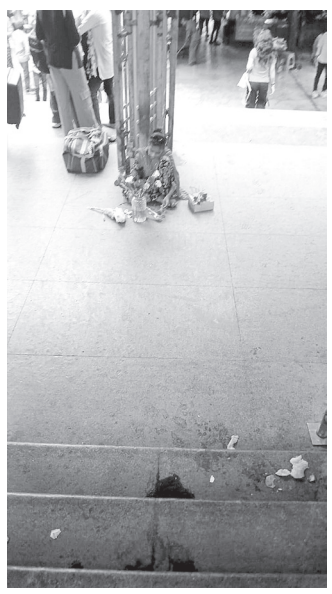

करती हूँ। उसने बताया कि घर की हालत अच्छी नहीं है, खाने-पीने की भी कमी रहती है, इसलिए वह और उसके भाई-बहन कुछ न कुछ काम करते हैं ताकि घर का खर्च चल सके। माता-पिता भी मजदूरी करते हैं। बातचीत के दौरान बच्ची ने यह भी बताया कि उनका परिवार पास की झुग्गी बस्ती में रहता है और उनके पास पक्का घर नहीं है। उसके भाई कोई रेड लाइट सिग्नल पर काम करते हैं, कोई मेट्रो स्टेशन के नीचे, तो कोई सफाई का काम करता है। बच्ची की बातें सुनकर साफ महसूस हुआ कि यह सिर्फ एक बच्ची की कहानी नहीं, बल्कि उन सैकड़ों मासूम बच्चों की सच्चाई है जो रोज अपनी उम्र से पहले ज़िम्मेदारियों का बोझ ढो रहे हैं। कई बार लोग उनसे फूल खरीद लेते हैं, तो कई बार बिना खरीदे कुछ पैसे दे देते हैं, लेकिन इन नन्हें जीवनों की रोजमर्रा की जंग अब भी शहर की भागदौड़ के बीच मेट्रो की छाया तले जारी है।

हादसे के बाद परिवार सहमा, आंगनवाड़ी में सुरक्षा पर बड़े सवाल

ब्यूरो रिपोर्ट

व्यक्ति की छोटी-सी लापरवाही कभी-कभी बेहद भारी पड़ जाती है। हमारे घरों, मोहल्लों और आस-पड़ोस में छोटे-छोटे बच्चे रहते हैं, जो नर्सरी या आंगनवाड़ी में पढ़ने जाते हैं। आंगनवाड़ी का उद्देश्य बच्चों को सुरक्षित वातावरण, शिक्षा, पोषण और सीखने का अवसर प्रदान करना होता है। लेकिन नोएडा के एक गाँव में रहने वाली 15 वर्षीय बालिका का दर्द ऐसा है जिसने उस व्यवस्था पर सवाल खड़े कर दिए हैं। वह कहती है कि उसकी छोटी बहन, जो कि सिर्फ चार साल की है, रोजाना खुशी-खुशी आंगनवाड़ी जाती थी। परिवार को आज तक विश्वास था कि बच्चे वहाँ सुरक्षित हैं और कार्यकर्ता उन पर पूरी नजर रखते हैं। लेकिन एक दिन की लापरवाही ने इस विश्वास को पूरी तरह तोड़ दिया। बालिका ने बताया कि जहाँ आंगनवाड़ी स्थित है, वहाँ से बाहर निकलने के तीन रास्ते हैं, और सबसे बड़ी समस्या यह है कि उन तीनों रास्तों पर किसी भी तरह का गेट या सुरक्षा व्यवस्था मौजूद नहीं है। बच्चे किसी भी समय अंदर-बाहर हो सकते हैं। कई बार उसने खुद देखा है कि छोटे बच्चे बाहर घूमते रहते हैं और कार्यकर्ताओं को इसकी बिल्कुल परवाह नहीं होती। न बच्चों की गिनती होती है, न निगरानी। हर माता-पिता भरोसा कर अपने बच्चों को आंगनवाड़ी भेजते हैं, लेकिन वहाँ सुरक्षा नाम की कोई जिम्मेदारी नहीं निभाई जा रही थी। घटना वाले दिन उसकी बहन हमेशा की तरह आंगनवाड़ी गई थी, लेकिन वहाँ की कार्यकर्ता बच्चों को छोड़कर अपने पंचायत के काम में व्यस्त हो गईं। बच्चों की देखभाल या सुरक्षा की चिंता किसी को नहीं थी। इसी बीच एक नशे में धुत व्यक्ति, जिसे अपने होश तक नहीं थे, खुले रास्ते से आंगनवाड़ी में घुस आया। न गेट था, न रोकने वाला कोई गार्ड। वह सीधा अंदर

पहुँचा और उसकी चार साल की बहन को पकड़कर शौचालय में ले गया और उसके साथ अश्लील हरकतें कीं। यह सब तब हो रहा था जब कार्यकर्ताओं को पता भी नहीं था कि बच्चे कहाँ हैं। कुछ समय बाद एक पाँच साल के बच्चे ने हिम्मत जुटाकर कार्यकर्ता को बताया कि एक अजनबी शौचालय में बच्ची को ले गया है। तब जाकर हड़कंप मचा। कार्यकर्ता शौचालय की ओर भागीं, लेकिन दरवाजा अंदर से बंद था। काफी कोशिश के बाद गेट खुलवाया गया और आरोपी को पकड़ लिया गया। ग्रामीणों ने उस नशेड़ी को पकड़कर कड़ी मारपीट की और बाद में पुलिस के हवाले कर दिया। जब इस घटना की जानकारी परिवार को मिली, तो सभी लोग तुरंत आंगनवाड़ी पहुँचे। चार साल की उस बच्ची की हालत देख परिवार फूट-फूटकर रो पड़ा। बच्ची को तुरंत अस्पताल ले जाया गया, जहाँ उसका इलाज हुआ। पीड़िता की बड़ी बहन ने मीडिया से कहा कि यह हादसा सिर्फ और सिर्फ आंगनवाड़ी कर्मियों की लापरवाही का नतीजा है। यदि बच्चों की देखभाल होती, यदि सुरक्षा गेट लगे होते या एक भी गार्ड तैनात होता, तो एक नशेड़ी व्यक्ति कभी अंदर नहीं घुस पाता और उसकी बहन पर यह अत्याचार नहीं होता। उसने कहा कि आज उसकी बहन अस्पताल में है, लेकिन कल किसी और के बच्चे के साथ भी यही हो सकता है। बच्चों की सुरक्षा को गंभीरता से लिया जाना चाहिए।बालिका ने अपील करते हुए कहा–'हम बच्चों को इसलिए आंगनवाड़ी भेजते हैं ताकि वे सीखें, खेलें, सुरक्षित रहें। लेकिन अगर वहाँ दरवाजे ही नहीं हैं, निगरानी नहीं है, तो बच्चे कैसे सुरक्षित रहेंगे? मैं चाहती हूँ कि तीनों प्रवेश द्वारों पर गेट लगाए जाएँ और वहाँ गार्ड तैनात किए जाएँ, ताकि कोई भी अजनबी अंदर न आ सके और बच्चे भी बिना निगरानी के बाहर न निकल सकें।' यह घटना गाँव के लोगों, परिवार और स्थानीय प्रशासन के लिए बड़ा सबक है कि बच्चों की सुरक्षा सिर्फ औपचारिकता नहीं, सबसे बड़ी जिम्मेदारी है। एक छोटी-सी चूक ने एक मासूम की जिंदगी को खतरे में डाल दिया। अब सवाल यह है कि क्या इस घटना के बाद व्यवस्था बदलेगी या फिर ऐसी घटनाएँ दोहराती रहेंगी।

बच्चों की सुरक्षा पर खतरा, माता-पिता और समाज को सतर्क रहने की जरूरत

बालकनामा रिपोर्टर: रितिका
बातूनी रिपोर्टर: सानवी

बालकनामा की रिपोर्टर रितिका जब गुरुग्राम के नाथूपुर की झुग्गी बस्ती में पहुँचीं, तो वहाँ के बच्चों की रोजमर्रा की परेशानियाँ सामने आईं। लेकिन सबसे चिंताजनक बात तब सामने आई , जब बातचीत के दौरान 10 वर्षीय विकास (परिवर्तित नाम) की खबर सामने आई। बस्ती की ही एक बच्ची सानवी ने बताया कि विकास बंगाल का रहने वाला है और वह लड़कियों की फोटो खींचता था। उसके अनुसार, एक अंकल उसे ऐसा करने के लिए कहते थे और इसके बदले में पैसे भी देते थे। जब रिपोर्टर ने पूछा कि वह अंकल कहाँ रहते हैं, तो सानवी ने बताया कि वे मंडी में रहते हैं। शुरूआत में विकास चुपके से लड़कियों की तस्वीरें लेता था, लेकिन एक दिन एक लड़की ने उसे पकड़ लिया और सख्त चेतावनी दी कि अगर दोबारा ऐसा हुआ तो पुलिस को बुलाया जाएगा। इस घटना के बाद से विकास ने फोटो खींचना बंद कर दिया। इस पूरे मामले ने बस्ती के लोगों को हैरान और चिंतित कर दिया। कई माता-पिता का कहना है कि अब बच्चों की सुरक्षा को लेकर और ज्यादा सतर्क रहने की जरूरत है। यह घटना केवल एक बच्चे की गलती नहीं, बल्कि समाज में बच्चों की सुरक्षा और जागरूकता की कमी को उजागर करती है। विशेषज्ञों का मानना है कि बच्चों को सही मार्गदर्शन देना, उन्हें सुरक्षित माहौल उपलब्ध कराना और संदिग्ध गतिविधियों पर नजर रखना हर अभिभावक और समुदाय की जिम्मेदारी है। यह मामला हमें याद दिलाता है कि बच्चों की सुरक्षा सिर्फ परिवार की नहीं, बल्कि समाज, समुदाय और स्थानीय प्रशासन–सभी की साझा जिम्मेदारी है। अगर किसी संदिग्ध व्यक्ति या घटना की जानकारी मिले, तो तुरंत पुलिस या बाल सुरक्षा समिति को सूचित करना बेहद जरूरी है।

शिक्षा से टूटी जातिवाद की दीवार

बालकनामा रिपोर्टर: दामिनी
बातूनी रिपोर्टर: रिया

जयपुर की जयसिंहपुरा खोर बस्ती के बच्चों ने साबित कर दिया है कि शिक्षा केवल किताबों तक सीमित नहीं होती, बल्कि सोच और समाज दोनों को बदलने की क्षमता रखती है। बस्ती की 13 साल की बालिका रिया (परिवर्तित नाम) कहती है कि शिक्षा से हमें सिर्फ पढ़ना-लिखना नहीं, बल्कि सही और गलत की पहचान भी मिली है और अब हम समझते हैं कि जाति या धर्म के आधार पर भेदभाव करना गलत है। रिया और उसकी 13 साल की सहेली अंकिता (परिवर्तित नाम) एक ही बस्ती में रहती हैं, लेकिन अलग-अलग जाति और समुदाय से होने के कारण सात साल तक एक-दूसरे से बात नहीं करती थीं। अंकिता बताती है कि घर में सिखाया जाता था कि सिर्फ अपनी जाति के बच्चों से ही बात करनी चाहिए, इसलिए हम अलग रहते थे, लेकिन जब से हम स्कूल और सेंटर जाने लगे, तब से साथ पढ़ने, खेलने और खाना खाने लगे। बस्ती की

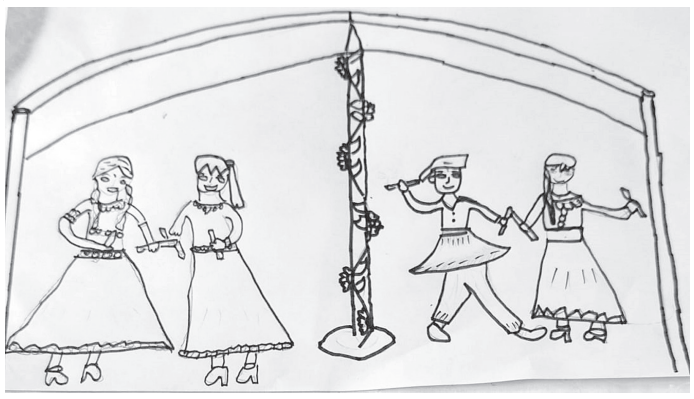

12 साल की बालिका अर्पिता (परिवर्तित नाम) गर्व से बताती है कि पहले यहां जाति के हिसाब से अलग-अलग पंडाल लगते थे, लेकिन इस बार नवरात्रि में सभी बच्चों ने मिलकर गरबा और डांडिया खेला। सिंगवाल समुदाय के बच्चे गोंड आदिवासी परिवारों के साथ शामिल हुए और उन्होंने हमें गरबा सिखाया। अब बदलाव सिर्फ बच्चों तक सीमित नहीं है, बल्कि उनके परिवारों में भी दिखाई देने लगा है। माता-पिता अब बच्चों को एक-दूसरे से मिलने-जुलने से नहीं रोकते। बच्चे बताते हैं कि बिना किसी भेदभाव के साथ मिलकर काम करने से खुशी भी दोगुनी होती है और बस्ती का माहौल भी खूबसूरत बन जाता है। 12 वर्षीय बालक रोहित (परिवर्तित नाम) कहता है कि जब हम जाति और धर्म का फर्क भूलकर साथ रहते हैं, तो खेल और त्योहार दोनों और भी मजेदार हो जाते हैं। बच्चों ने यह दिखा दिया है कि शिक्षा वह चाबी है जो न केवल अंधविश्वास की बेड़ियों को तोड़ती है, बल्कि समाज को एकता, सम्मान और प्रेम के रंगों से भर देती है।

पाँच दिवसीय कार्यशाला: सड़क और कामकाजी बच्चों में जागा आत्मविश्वास, निखरे नेतृत्व गुण

पृष्ठ 1 का शेष

संगीत है और संगीत हमारे आसपास की हर चीज में है।

12 वर्ष की दीपू (परिवर्तित नाम) ने कहा कि वह शुरूआत में कार्यशाला में आने से डर रही थी लेकिन यहाँ आकर उसका आत्मविश्वास बढ़ा और उसने मंच पर बोलना सीखा। 12 वर्ष की ललिता (परिवर्तित नाम) ने कहा कि बस्ती में ऐसा माहौल नहीं मिलता जहाँ मानसिक और शारीरिक विकास हो सके, यहाँ खेल और समय प्रबंधन सीखने को मिला। एक 14 वर्षीय बालक ने बताया कि उसे पहले सिर्फ पुलिस का नंबर पता था, अब वह कई हेल्पलाइन और विभागों के बारे में जानता है और समझता है कि कौन सी संस्था किस तरह मदद कर सकती है। 12 वर्षीय बालिका ने बताया कि उसे अंतिम सांस्कृतिक कार्यक्रम जीवन का सबसे मजेदार अनुभव लगा।

वास्तव में यह कार्यशाला सिर्फ पाँच दिनों तक सीमित अनुभव नहीं रही, बल्कि बच्चों के जीवन में एक महत्वपूर्ण पड़ाव साबित हुई। यहाँ उन्होंने नेतृत्व, आत्मविश्वास, टीमवर्क, अधिकार और समस्याओं से निपटने के तरीके सीखे। अब यह बच्चे इन सीखों को अपने-अपने समुदायों में लेकर जाएँगे, जहाँ वे अन्य बच्चों तक भी यह जानकारी पहुँचाएँगे, उन्हें स्कूल से जोड़ने, खेल और गतिविधियों में शामिल होने, अपने अधिकार पहचानने और कठिन परिस्थितियों से निकलने की हिम्मत देने में मदद करेंगे। इस तरह यह कार्यशाला न केवल मौजूद बच्चों को बदलने का माध्यम बनी, बल्कि उनके माध्यम से कई और बच्चों तक जागरूकता की बातें पहुँचेंगी। यही इस कार्यशाला का वास्तविक उद्देश्य भी रहा कि जब एक बच्चा सीखता है, तो उसके साथ पूरा समुदाय बदलता है।

यह पत्र सीमित वितरण के लिए है इस अंक में सभी चित्र बच्चों की अनुमति से प्रकाशित किए गए हैं

बालकनामा अखबार को प्रकाशित करने में हमारी मदद करने के लिए एचसीएल फाउंडेशन तथा अजीम प्रेमजी फाउंडेशन का बहुत धन्यवाद। आप प्रकाशन में भी हमारी मदद कर सकते हैं। बालकनामा अखबार के प्रकाशन में आप भी सहयोग दे सकते हैं। संपर्क करें : info@chetnango.org

बढ़ते कदम , 31 , बेसमेंट , गौतम नगर , नई दिल्ली - 110049 द्वारा प्रकाशित। न्यूजलेटर सीमित वितरण के लिए। बच्चों के चित्र उनकी अनुमति से प्रकाशित।
समर्थन के लिए संपर्क करें -editorbalaknama@gmail.com फोन - 41644471